॥ श्री ॥

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रावक ऋषभदासजीविरचित हित शिक्षानो रास प्रारंभः ॥

॥ काश्मीर मुखमंडणी, भगवति ब्रह्मसुताय ॥ तुं त्रिपुरा तुं भारती, तुं कविजननी माय ॥ १ ॥ तुं सरस्वति तुं शारदा, तुं ब्रह्माणी सार ॥ विदुषा माता तुं कही, तुझ गुणनो नहि पार ॥२॥ हंसगामिनी तुं सही, वागेश्वरी तुं होय ॥ देवि कुमारी तुं सही, तुझ सम अवर न कोय ॥३॥ भाषा तुं ब्रह्मचारिणी, तुं वाणी दे वाणी ॥ हंसवाहिनी तुं सही, गुण सघलानी खाणि ॥ ४ ॥ ब्रह्मवादिनी तुं सही, तुं माता मति देह ॥ तुं रमजे मुख माहरे, चिंत्युं काज करेह ॥५॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ चिंत्युं काज करेशुं आज, तुझ नामे सि

सरियां काज ॥ तुज नामें बुद्धि पामुं सार, ज्ञान विना जीवित धिक्कार ॥ १ ॥ ते दारिद्री जगमां ज ला, ज्ञान सहित दीसे गुणनिला ॥ अर्थ सहित ने शास्त्र रहित, ते नर नावे महारे चित्त ॥२॥ ज्ञानी कापडी आगल कस्यो, मूरख महोटो नृपणजस्यो ॥ बहु आजरणें शोजे नहिं, ज्ञान जलो तो शोजे त हीं ॥ ३ ॥ ज्ञानी नर सघले पूजाय, नरपति निज नगरेंज मनाय ॥ ज्ञानी जलो नर जोहु कुरूप, कोण जुवे कोयललुं रूप ॥ ४ ॥ कोयल रूप स्वर म धुरो जेह, तपस्वीरूप क्षमाज कहेह ॥ पतिव्रता नारीनुं रूप, कुरूपने विद्याज सुरूप ॥ ५ ॥ अधिकुं रूप ते विद्या कही, गुप्त धन ते विद्या सही ॥ यश सुखनी देनारी एह, वाटें बांधव सरिखी जेह ॥६॥ विद्या राजजवनें पूजाय, विद्याहीन अज पशुआ गाय ॥ लक्ष्मी पण जुगतो शोजती, जो उपर बेठी सरस्वती ॥ ७ ॥ नाणा उपर अक्षर नहिं, ते नाणुं [illegible]वि चाले कहिं ॥ जिहां अक्षर तिहां महत्त्व ते बहु, [illegible] अंगने पूजे सहु । [illegible] ॥ तिण कारण अधिकी [illegible]ता, जेहथी गणध[illegible] [illegible]रा यती ॥ आचारिज [illegible] उवज्झाय, पंडि[illegible] [illegible] तुजथी थाय ॥ ए॥

मुगति तणी पदवी पण होय, ज्ञान समुं नहिं दूजुं कोय॥ जेहथी सकल जेद जल लहे, स्वर्ग नरगनी वातो कहे ॥ १० ॥ कहे पृथिवी सायरनां मान, नदी डूंगर ने नगर निधान ॥ जीव अजीवना जांखे जेद, जांखे विवरी च्यारे वेद ॥ ११ ॥ जाणे पुण्य पापनी वात, साधु धर्म श्रावक अवदात॥ जव्य अजव्य ज्ञानी उंखखे, मूरख अणसमजु सहु जखे ॥ १२॥ तेणें ज्ञान अधिक कहेवाय, लहे शारद तणे पसाय ॥ वेद पुराण पिंगल तो थयुं, प्रथम नाम शारदनुं ग्रह्युं ॥१३॥ कवित काव्य ने गाथामांहि, जाषा विण नवि चाले क्यांहि ॥ आगम चरित्त रास ने जास, सचराचर जग ताहारो वास ॥१४॥ तुं पुत्री छे ब्रह्मा तणी, ताहारी शोजा दीसे घणी ॥ सखरूं रूप सुकोमल अंग, तुं माता मुफ राखे रंग ॥१५॥ गुण ताहारा नवि लाधे पार, तुं करजे कविजननी सार ॥ आज हुर्व हेडे उल्लास, नीपाउं हिव शिक्षारास ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ कान्ह वजाडे वांसली ॥ ए देशी ॥

॥ राग आशावरी तथा सिंधूडो ॥

॥ रास रचुं रंगें करी, मांहे जाव जलेरा ॥ ॥

शास्त्रना बोलडा, सिद्धांतज केरा ॥ १ ॥ चरित्रन्नेद कहुं जला, मांहे लौकिक बोलो ॥ सुणतां पंकित पणुं वधे, नर टले निटोलो ॥ २ ॥ वैदक शास्त्रमांहि सही, कविघटना केती ॥ ज्योतिष न्नेद कहेशुं सही, विधि श्रावक जेती ॥३॥ साधुपंथ कहुं सही, वली स्वपन विचारो ॥ विधियें विनति सांजलो, गुण वाधे सारो ॥ ४ ॥ विधि जाणे जाग्या तणी, नव पद किम गणियें ॥ नोकरवाली किसि कही, ते विधि पण सुणियें ॥ ५ ॥ केम पडिक्कमणुं कीजियें, पच्चक्काण सुणीजें ॥ केम शंकाशल्य टालियें, केम वस्त्र धरीजें ॥ ६ ॥ किम जिनमंदिर जूहारियें, किम वंदन कीजें ॥ पूजाविधि सुणजो सहु, विधि न्नोजन सुणीजें ॥७॥ दान केही परें दीजीयें, केम वणज करीजें ॥ सन्नामांहे केम बेसीयें, जल किणिविध पीजें ॥८॥ दौरकर्म केही परें करे, सुण विधि अंघोलो ॥ शरम केही पेरें कीजियें, सुण विधि श्रबोलो ॥९॥ पुरुषें केही विध बोलवुं, किम न्नोग न्नजेवो ॥ सेवकनी विधि सांजलो, साहेब पण केहवो ॥ १० ॥ केही परें मारग हींमीयें, शुन्न करणी केही ॥ गर्न्न तणा न्नेदज सुणी, जीव चेतो तेही ॥ ११ ॥ वाणीही दंरू न्नेद

॥ ११ ॥ धर्म अर्थ ने कामो रे, त्रण वर्ग साधतो ॥ एक एक प्रति नवि हणे ए ॥ १२ ॥ अतिथि साधु जेह रे, दीन क्षीण प्रति वली ॥ उचित साचवे निर्म लुं ए ॥ १३ ॥ अनभिनिवेशी एह रे, परभाव त णो ॥ प्रणाम नहिं वली जेहने ए ॥ १४ ॥ आदर करे अत्यंत रे, देखी गुणवंता ॥ पक्षपाति होय तेह नो ए ॥ १५ ॥ हींमे नहिंज अकालें रे, वरजे ते दे शडो ॥ गमन करे नहिं त्यां वली ए ॥ १६ ॥ वलि पोतानो चिंती रे,कार्यारंभ करे ॥ ज्ञानवृद्धने पूजीयें ए ॥ १७ ॥ पच्चवीशमो गुण जोय रे, वंध क्रियादि क ॥ ठंभे करे गुणवंतनो ए ॥१८॥ दीरघदृष्टि होय रे, आगलथी वली ॥ सर्व कामें आलोचतो ए ॥१९॥ कृत्याकृत्य विशेष रे, श्रावक जाणतो ॥ कीधो गुण नवि विसरे ए ॥ २० ॥ विनयादिक गुण जेह रे, कु ललज्जा धरे ॥ देखी दीन दया धरे ए ॥२१॥ सौ म्याकार मुख सौम्य रे, कोमल वचनशुं॥ पर उपका री परगडो ए ॥२२॥ काम क्रोध मद लोभ रे, आ नंद मानशुं ॥ अंतरंग वैरी तजे ए ॥ २३॥ जीते इं द्रिय पांच रे, ए गुण पांत्रीश ॥ सामान्य पणे में आ णिया ए ॥ २४ ॥ गुण समकित विशेष रे, व्रत वा

बोले नहिं, खोंखारो पण वरज्यो सहि ॥ हुंकारो ने शब्द अत्यंत, ते न करे जे उत्तम जंत ॥ ३ ॥ कारण सोय सुणो नर नारी, जागे रांधणी ने पाणिहारी ॥ व्यापारी पंथी कर्पणी, तस्कर चाले चोरी जणी ॥ ४ ॥ तिण कारण अणबोल्यो रही, पछिम रातें जागे सही ॥ अघोर निद्रायें नवि जागतो, दोय भवें ते दोहिलो थतो ॥५॥ धर्म अर्थ ने त्रीजो काम, नवि आराधे नरनां नाम ॥ ज्ञान ध्यान करजो वली जाप, जिम टले जन्म मरण संताप ॥ ६ ॥ ३० ॥

॥ श्लोक ॥

जन्मदुःखं जरादुःखं, मृत्युदुःखं पुनः पुनः ॥ संसारसागरे दुःख,तस्माज्जाग्रत जाग्रत ॥ १ ॥ माता नास्ति पिता नास्ति,नास्ति भ्राता सहोदरः ॥ अर्थो नास्ति गृहं नास्ति, तस्माज्जाग्रत जाग्रत ॥२ ॥ आशा हि लोकान् वध्नाति, कर्मणा वहुचिंतया ॥ आयुः क्षयं न जानाति, तस्माज्जाग्रत जाग्रत ॥ ३ ॥ कामः क्रोधस्तथा लोभो, देहे तिष्ठंति तस्कराः ॥ ज्ञानखड्गप्रहारेण, तस्माज्जाग्रत जाग्रत ॥४॥ सर्व गाथा ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राति गमाई सोवतें, दिवस गमाया खाय ॥

राखतां, तेहने मुक्तिनो माग होई ॥ तेहनो पंथ न हिं अवर कोइ ॥ पंच० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आ दि अनादि नित्य सिद्धनुं समरखुं, जपत आयरिय उवझाय सारो ॥ सकल मुनि समरतां पुण्य पहोंचे वड्डु, जीव सुखीयो सदा होय ताहारो ॥ मान तुं बोल ए पुरुष महारो ॥ पंच० ॥ २ ॥ जपत अरि हंत जे हाथ माला विना, तेहने पुण्य ते सबल होई ॥ शंखमाला ग्रही जाप जिननो करे, सहस गुणुं फल तास जोइ ॥ कांय आलस करो पुरुष कोइ ॥ पंच० ॥ ३ ॥ वलीअ विद्रुम ने रक्त रतांजली, क रिय माला कोइ हाथ जाले ॥ सहस गुणुं फल ते हने त्यां हुवे, फटिक रत्नें दस सहस आले ॥ जश घणो तेहनो जगमांहे चाले ॥ पंच० ॥ ४ ॥ माला मोती तणी लाख नवकार फल, चंदनमाला फल कोडी देही ॥ दश कोडी नवकार फल हेममाला कही, कमलबंधें कोडाकोडि लेही ॥ वात धरजे मन मांहि एही ॥ पंच० ॥ ५ ॥ नोकरवाली जे गुणें रु द्राक्षनी, असंख्य नोकार फल तेह आपे ॥ अनंत नोकार फल तेह नर पामता, पत्रजीवानी जे हाथ थापे ॥ पापनां परल ते त्यां न व्यापे ॥ पंच० ॥

हृत कवी ॥ एह जिन शासनें वात कहेवी ॥
॥ १२ ॥ पाटला उपर जेह नव पद जपे, आनुपूर्वी थकी अधिक जाणो ॥ अरिहंत बार गुण आठ तिम सिद्धना, गुणह छत्रीश आचारज वखाणो, गुण पचवीश उवझाय आणो, गुण सत्त्यावीश मुनि ना प्रमाणो, एटले एक शो आठ आणो ॥ जेह मणिका सही माल ताणो ॥ पंच० ॥ १३ ॥ नवकर वाली आ दग्ध माटी तणी, लाकडुं हाड ने जेह पाणो ॥ अल्प फल आपशे तेह माला गुणी, गुणंत मूरख तजे तेह जाणो ॥ तेणें मानी अरिहंत आणो ॥ पंच० ॥ १४ ॥ अंगुलि अग्रने मेरु उल्लंघतां, शून्यचित्तें फल अलप आपे ॥ शब्दथी मौन जलुं मौ नथी मन जलुं, जाप करतो भवदोर कापे ॥ रूपच कहे जीवने मुक्ति थापे ॥ पंच० ॥ १५ ॥ ए६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाप जपंतो थाकतो, ध्यान धरे तेणी वार ॥ ध्यान थको थाको जदा, जपे जाप नवकार ॥ १ ॥ चेइु थकी थाको जदा, स्तोत्र गुणे तिण वार ॥ पूजा कोडी समुं भली, भांख्युं पुण्य अपार ॥ २ ॥ स्तोत्र कोडि सम जप कह्यो, जाप कोडि सम ध्यान ॥ ध्यां



चीवर नर धरे, मल मूत्र उत्तर दिसि करे ॥ रातें द
क्षिण सामो रही, शरीर शंका टाले सही ॥ ३ ॥
जस्म ठाण गोशाला जहिं, थंमिल मातरुं न करे त
हिं ॥ राफो मल मूतरनां ठाम, तरुवर अग्नि जल
आराम ॥ ४ ॥ नदी मारग वरजे समशान, वरजे
स्त्रीलोचन जो शान ॥ पुरुष वडेरा नजरें नाहिं, जाए प
ञ्चर डुंगर जाहिं ॥५॥ उतावलो नर त्यां नवि होय,
गुह्य ठाम माटीयें लोय ॥ जलें हाथ ते पहेलो धो
य, पछें देह पखाले सोय ॥ ६ ॥ थंमिल वेगलो प्रां
यें जाय, जली जूमि नहिं जीवह ठाय ॥ विवेकवि
लासमांहे कह्यो विचार, मौनें वस्त्र धरीज निहार ॥
॥ ७ ॥ वमी रहित नवि बेसे गाय, थंमिल जावुं
तेणें ठाय ॥ठंघनिर्युक्तिमांहे पण कह्युं, आगममांहे
मुनिवरने कह्युं ॥ ८ ॥ नीचां घर वसति वहु ज्यांह,
थंमिल मुनि नवि जाशे त्यांह ॥ जिहां उपधान उ
दाह नवि थाय, साधु थंमिलें त्यांकणे जाय ॥ ए॥
विषम जूमिका तृण ज्यां बहु, ते थानक नर टालो
सहु ॥ ठ रुतु मही वर्ण पलटाय, तेणे थानकें थं
मिल नवि जाय ॥ १० ॥ जघन्यथकी अंगुल महि
चार, अचित्त हुइ जाणे निर्धार ॥ घर वाडी देउल ने

॥ दोहा ॥

॥ मरणसमय चेत्यां नहिं, न कस्यो उंचो हाथ॥ आराधना अणसण विना, चाल्यो जीव अनाथ ॥१॥ जिहां वे पोर जगामणुं, तिहां जीव संवल लेह ॥ जिहां चोराशी लख्ख भ्रमण, तिहां नर विलंब करेह ॥ २ ॥ जावजीव धन मेलियुं, कोइ न आवे साथ॥ धन मूकीने चालियो, भूमि पड्या वेहु हाथ ॥ ३ ॥ पुहवी नित्य नवेरडी, पुरष पुराणा थाय॥ वारें लऊ अप्पणें, नाटक नाची जाय ॥ ४ ॥ पुहवी रंग विरंगिणी, कदि नवि पूगी आश॥ केता राय रमाडि या, केता गया निराश ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ १२९॥

॥ सोरठा दोहा ॥

॥ चाल्यो जाये साथ, को केने पडखे नहिं ॥ वा वरि लेजो हाथ, वारे वहेते आपणे ॥१॥ गई सवा र वहेय, वार सबली आवे नहिं॥ हियडा हाथ घसी स, वेठो वड कलियो थई ॥ २ ॥ जव लगें रोग जरा नहिं, जव लगें इंडि परम्म ॥ दशवैकालिकमांहे कह्युं, तव लगें कीजें धर्म्म ॥ ३ ॥ जे दीजें कर अ प्पणें, ते लऊ परलोय ॥ दीजंतां धन संपजे, कूर्ड व हंतो जोय ॥ ४ ॥ वारे लऊ अप्पणे, वाहे जडफड

ष्टी रे, टाले चउराशी ॥ जघन्यथकी दश टालियें ॥ १० ॥ पन्नही मुख तंबोल रे, जल नवि मैथुन तिहां कणे वरजवुं ए ॥११॥ लहूडी नीति।न पेध रे, वडी वेगें थकी ॥ जोजन सोवण जूवटूं ए ॥१२॥ आशातना एम टाली रे,चेश्वंदन करे॥शाठ हाथ अलगो रही ए ॥१३॥ जघन्यथकी नव हाथ रे, अलग रही करी॥चैत्यवंदन करजे सही ए ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन पूजंतां पामियो, मुक्ति पुरीनो वास ॥ नागकेतु निर्मल थयो, पूगी मननी आश ॥ १ ॥ जिन जुहारि गुरु वंदतो, करतो कांइ पच्चरकाण ॥ गुरु सामो वेसी करी, नव रस सुणे वखाण ॥ २ ॥ करे वखाणज नव नवां, रागें कथन कलाय ॥ गाहा गाथा दूहडो,सुणतां पंमित थाय ॥३॥ श्लोक ॥ मुंमे मुंमे मतिर्जिन्ना, कूपे कूपे नवं पयः ॥ देशे देशे नवाचाराः, नवा वाणी मुखे मुखे ॥ ४ ॥ अक्तर मंत्र विना नहिं, धन विण महीय न होय ॥ मूल नहिं उंपध विना,डुर्लज आम्ना सोय ॥ ५ ॥ शास्त्रजाव .. लहे, न लहे मूढ अजाण ॥ चंड्कांत अमृत जरे, न जरे बीजा पापाण ॥ ६ ॥ जमरो



गी जोय ॥ १ ॥ लागो राग कुरंगी साथ, सुरंगीशुं नवि करतो वात ॥ रात दिवस कुरंगीसंग, रमे पुरुष पोताने रंग ॥२॥ एक दिवस कटकें गयो राय, सार्थे सुजटने लेइ जाय ॥ वारे वरसें परगट थाय, सेवक जइने वधामणी खाय ॥ ३ ॥ नारी कुरंगी अतिहिं उछंग, खाधुं धन बहु मेली लंग ॥ जोजननो तव कख्यो विचार, शुं रांधुं आव्यो जरतार ॥ ४ ॥ बुद्धि केलवी नरने कहे, नारी सुरंगी अलगी रहे ॥ वधामणी खाउं तिहां जई, तुक घर नर आवे ठे सहि ॥ ५ ॥ गयो पुरुष सुरंगी पास, बोल्यो त्यां मनने उल्लास ॥ वधामणी आव्यो जरतार, सामग्री कीजें शणगार ॥ ६ ॥ कहे सुरंगी धन्य अवतार, मुक जरतारें कीधी सार ॥ दीये वधामणी रांधे अन्न, नर उपर ठे निरतुं मन्न ॥ ७ ॥ सुजट वही आव्यो तेणे वार, मानेती ज्यां कुरंगी नार ॥ सूती गोदडुं ठंढी करी, बोले सामी जिम कूतरी ॥ ८ ॥ तुमसे वक आव्यो जे अहिं, मुकने वलगो मूके नाहिं ॥ शीलवती हुं तारी नारि, ठेली काढ्यो में घर बारि ॥ ए ॥ तुमें उतास्वो मुकशुं प्रेम, वधामणी पर मोकली केम ॥ हवे जाउं तुमें तेहने घरे, प

॥ ढाल ॥ मद्दीडुं वलोवे हो गोपी ॥ ए देशी ॥
॥ राग गोडी ॥ सुरसुंदरीकी चाल ॥

॥ मति निर्मल हो थाय, सुणो दुष्ट तणी कथाय ॥ कणची जीरण हो जे हो, करे जली पटेली तेहो॥१॥ तेह ने अजीरण हो ठेली, ते उपर करेज पटेली ॥ कालें जीरण हो जाणुं,आव्युं देव तणुं तस आणुं॥२॥नाव्यो भूमियें हो रूड, सुत पूछे ठे साहामुं जुइ ॥ कोण दुःख तुमने हो तातो, ते जांखोजी अमने वातो ॥ ३ ॥ तुला तुमारी हो कीजें, कहोतो दान विप्रने दीजें ॥ दीजें गवरी हो दुःख हरणी, उतारे नदी वैतरणी ॥ ४ ॥ आपुं शय्या हो तलाई, पोढी सरगें सुख नर जाइ ॥ तव ते बोल्यो हो तातो, जीव सुपरें तो सहि जातो ॥ ५ ॥ अर्थ एटलो हो मुज सारो, पटेल अजीरणने जइ मारो ॥ सुत कहे शुं ए हो कामो, अंतें लीयो रामनो नामो ॥ ६ ॥ आपे जीरण हो उत्रो, नहीं मुज कुलनां तुमो पुत्रो ॥ न करो एतुं जो काजो, जीव सुखें जाये किम आजो ॥७॥ तात ते फूरे हो अपारो, सुत बोल्यो तेणी वारो ॥ एहनी करशुं हो घातो, तव बोल्यो वेगें तातो ॥८॥ केम हणेशो हो पुत्रो, प्रगट मारतां जाय घरसूत्रो ॥

पठी गरढो थइ ॥ १ ॥ पाणी ग्रहण करे तव घर आणी नवयौवन रंज ॥ रूपवती ने चंचल घणुं, मन रंजे जरतारह तणुं ॥ २ ॥ कपट केलवे त्यां वां जणी, तिम तिम आनंद पामे धणी ॥ मूढ न जाणे स्त्रीनी वात, पीये नीर जेतुं स्त्री पात ॥ ३ ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जे शूरा जे पंमिता, जे होय बहु गंजीर ॥ नारी सवे नचाविया, जे होय बावन वीर ॥ १ ॥ स्त्री प्रायें सब वंकडी, मत को करो विश्वास ॥ माथे घट चडावी करी, पठे दीये गले पास ॥ २ ॥ जिस कारण शिर कटीयें, धरणी ढले जब देह ॥ रुधिर पिये ततक्षण महि, धिग धिग त्रिया सनेह ॥ ३ ॥ नारी मदन तलावडी, बूडो सब संसार ॥ काढण हारो को नहिं, बूड्यां बुंच न वार ॥४॥ वाघणी वग डामांहेली, जबहिं मिले तब खाय ॥ नारी वाघण वशें पड्यो, वसतियें फाडी खाय ॥ ५ ॥ कूड कपट नी कोथली, स्त्री होय नितुरी जाति ॥ देखी न शके रूयडुं, करे पियारी तांति ॥ ६ ॥ नारीदेह दीवो कर्यो, पुरुष पतंगी होय ॥ जग सघलो खूंची रह्यो, निकले विरलो कोय ॥ ७ ॥ नारी नहिं रे बापडा,

विकसे कमल जिम, मन पंजरे न माय ॥ २ ॥ सा
रुं फूल सेवंतरुं, जोमि पड्युं करमाय ॥ ते न कहि
जें मानवी, जे प्रीति करीनें जाय ॥ ३ ॥ सखि हे
तें केम विसरे, जे मनमांहे पइठ ॥ हियडाथी जो
उतरे, तो सुपनांतर दीठ ॥ ४ ॥ स्वामि तुम चालो
सही, मुजनें लीजें साथ ॥ दिवस दोहेलो करी निर्ग
मुं, पण नवि जाये रात ॥ ५ ॥ ब्राह्मण कहे रे बा
पडी, लावीश जाजुं धन्न ॥ सुख जर रहेशुं बेउ ज
णां, पठे जिम ताहरुं मन्न ॥ ६ ॥ नारी कहे तुमें
चालतां, कोण होय मुज सहाय ॥ ब्राह्मण कहे तुम
सांजलो, गोविंद करे चिंताय ॥७॥ इस्युं कहीने संच
र्यो, घर रहि चंचल नार ॥ नव यौवनवय चालियो,
केइ परें मन रहे ठार ॥८॥ स्त्री विण अंकुश नइत
रुं, मंत्रि विहूणुं राज ॥ ए बहुकाल रहे नहिं, रूपन
कहे न रहाज ॥ ए ॥ न रही शीलें ब्राह्मणी, करे
गोविंदशुं जोग ॥ मनमें चिंते बेहु जणां, जलो मि
ल्यो संयोग ॥ १० ॥ रूडां माणस कारणें, जो जग
वैरी होय॥जमर न छंडे केतकी, जो शिर कप्पे को
॥ ११ ॥ विपहर वाडीने विषम घर, पंचाइण र
खंति॥जो जम बेसे बारणे, रत्ता तोहु मिलंत ॥१२॥

नारी ने हुं गोविंद, तीरथ कीजें अति आनंद ॥७॥ नारी विनति कीधी घणी, पूरव कथा भांखो आप णी ॥ वांभण कहे जारे पापिणी, कोनी नारी ने कुण तुझ धणी ॥ ८ ॥ नारीने निशालीयो इहां क्यांहि, वली मुआं जे मुझ घरमांहि ॥ तुमो ठोव्यं तर मानव नहिं, शुं ठगवा मुझ अव्यां अहिं ॥९॥ घणां वचन गोविंदें कह्यां, मूरख वांभणे नवि सद ह्यां ॥ कृपन कहे एहवा नर जेह, धर्म योग्य नवि दीसे तेह ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २३९ ॥

॥ ढाल ॥ जड्‌ मोह्यो रे वीरवचन ॥

॥ रसें रे ॥ ए देशी ॥

राग आशावरी ॥ सिंधूडो ॥ तेहने धर्म न क हियें जाणजो रे, पूर्वव्युद्ग्रहियो रे जेह ॥ एक नर पतिनो वेटो आंधलो रे, जोलव्यो मंत्रियें तेह ॥१॥ तेहने धर्म न कहियें जाणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ नृप ण पहेरे दिन दिन नवनवां रे ॥ जातें सवलो दातार ॥ जाचक जन रे आवी गुण स्तवे रे, देतां न लागे वार ॥ ते० ॥ २ ॥ नृपने आवी मंत्री तिहां ए म कहे रे, सांभलो महोटा हो राय ॥ दान सवल देतो तुम दीकरो रे, भंडार खाली रे थाय ॥ते०॥३॥

तेह ॥ते० ॥११॥ कुमर न माने केण तिहां कोइ तणुं रे, कहेतां वढवा रे धाय ॥ रूपज कहे जे कुबुद्धिने मळ्यो रे, सु पुरुष कुपुरुष थाय ॥ ते० ॥ १२ ॥२५२॥

॥ दोहा ॥

॥ वांका जमला पाथरा, सहे पराजव जूरि ॥ सिंहणी वांकी सरसमां, नाखीजें अति दूर ॥१॥ रे रे परवत वापडा, वांसह वास म देस ॥ आप घसा चे पर दहे, निगुणा काहु करेस ॥ २ ॥ मन मेलां मुख ऊजला, ते नर मुह म दीठ ॥ पोत विहूणें लूण हे, आले गमे मजीठ ॥३॥ कुबुद्धि कडुवे लींबडो, मलियो आंबा साथ ॥ अंब धरे रंग लिंबनो, कोइ न काले हाथ ॥ ४ ॥ कुमर मळ्यो कुबुद्धि तणे, पे ठो कुमनज जरम ॥ सहुने जूठा जाणतो, मंत्री साचो परम ॥५॥ एम नर कुमतें घेरियो, पूर्वव्युद्ग्रहियो जेह ॥ तेहने धर्म कहेवो नहिं, समजे पण नहिं तेह ॥ ६ ॥ सर्व गाथा ॥ २५७ ॥

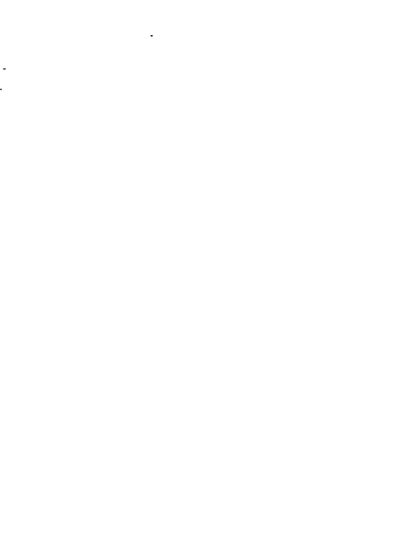
॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सहे उपदेश तणा हजार, कहेतां नवि बूजेज गमार॥ ब्रह्मदत्त नवि पाम्यो पार, उदाइ रायनो मारणहार ॥ १ ॥ चपल कान गज केरो जोय, राज



लिये संयम नार ॥ १ ॥ महापापी नर हुंता जेह, धर्म प्रजावें बूफया तेह ॥ सुसमाने दृष्टांतें जोय, पुत्र चिलाती धर्मी होय ॥ २ ॥ फल्युं फूल्युं तात घरसार, ते ठंमयो ढंढणा कुमार ॥ जूख तरश खमतो मन रली, ठंहे मासें हुवो केवली ॥ ३ ॥ हित उप देश महिमा जाणियो, इंद्रपणुं पाम्यो वाणियो ॥ कुंमल किरिट तणो धरनार, अलंकारनो न लहुं पार ॥ ४ ॥ हित उपदेश कह्याथी सहु, कार्त्तिक शेठ सुख पाम्यो बहु ॥ सुधर्म इंद्र हुउं ते सार, जेह नी क्रुद्धि तणो नाहिं पार ॥ ५ ॥ इंद्र समी रिद्धि कहि जेह, जरत चक्रवर्त्ती पाम्यो तेह॥ मानव लोक नो स्वामी कह्यो, हित उपदेश कथाथी थयो ॥ ६ ॥ धर्मदेशना सुणतो जदा, संदेह अज्ञान टले नर तदा ॥ कर्में दृढ व्यसन मूकतो, मारग सूधो जाणे ठतो ॥ ७ ॥ टले कषाय विनय पण जजे, संगति सार कुसंगति तजे ॥ समजे श्रावक मुनिवर धर्म, ते सुख पामे परगट परम ॥ ८ ॥ कुमारपाल थावच्चो सुणो, गुण हूउं परदेशी घणो ॥ श्वेतंविका नगरीनो नाथ, हणी जीव न धोतो हाथ ॥ ९ ॥ चित्र सारथि मंत्री जेह, सावत्थीयें आव्यो तेह ॥ केशी गणधर तिहां

पशुए काणां सहि नवि थाय, कीटक जीवमांहे केम जाय ॥ मानव जीव ते किहां नीकळ्यो, नथी जीव संदेह मुज टळ्यो ॥ १९ ॥ गुरु कहे सांजळ नृपति सार, तुज नारीशुं करयो व्यभिचार ॥ तें काळ्यो कहे मूको मुने, कहे महेर ब्यावे कांइ तुने ॥ २० ॥ कहे राजा तस छोडुं नहिं, बोलवा लगे न पडखुं नहिं ॥ पूरो करुं नवि धोउं हाथ, एम जांखे परदेशी नाथ ॥ २१ ॥ नवि छूटे ते तुज वश पड्यो, तिम नारक ते करमें नड्यो ॥ नरगमांहि थी छूटे नहिं, जे तुज कहेवा ब्यावे अहिं ॥ २२ ॥ केसर चंदन लेई करी, जलां धोतियां अंगें धरी ॥ जाये जिन पूजेवा जिस्ये, महत्तर पुरुष बोलावे तिस्ये ॥ २३ ॥ जेम तेथी नर नाठो जाय, तिम देवा को प्रगट न थाय ॥ जोयण पंचसय गंध उछले, केम माता तुज ब्यावी मले ॥ २४ ॥ अरणीमां हे अग्नि छे सही, कटका करतां दीसे नहिं ॥ तिम कायामांहे जीव छे छतो, रूप रहित ते नवि दीसतो ॥ २५ ॥ लेइ वायरे दहडो जरयो, वली प छें ते ठालो करयो ॥ तोलंतां ते सरखो जार, काया जीवनो एह विचार ॥ २६ ॥ नरने गढवामांहि उ



॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सत्यवादी गुरु जगमां सार, कालिकाचारिय थत श्रवनार ॥ दत्तराय तुरंग नणि धणी. सत्य घो स्युं जीवित श्रवगुणी ॥ १ ॥ यथास्थित परगट न वि जणे. वोध सात्तने ते नर हणे ॥ जन्म जरा म रण उदधि. गयो मोय मरि जीव निबंधी ॥ २ ॥ उत्सूत्र बोलतो हुंतो जंत. बांधे चिकणां कर्म श्रनं त ॥ संसार वधारे निहुं गति फरे. जे नर माया मिरषा करे ॥३॥ धर्मविषे माया नवि होय. कपट कला म म करजो कोय ॥ सदोष परंजवा म बोल, प्रगट वचन श्रणलज्जे खोल ॥ ४ ॥ धर्ममांहि नर जोजो कथी. तयका उकोडा तिहां नथी ॥ कपट वंचना ठग रहि श्रेय. सुर नरने सरिखुंज कहेय ॥५॥ सहुने सरिखुं नांखे जेह. मुगतिपंथनो नारु तेह ॥ सनामांहि नर बोले जिम्युं. एकांत ठामे नांखे तिम्युं ॥ ६ ॥ लोक देखतां जेहवुं करे. एकांतिक तेहवुं श्रादरे ॥ सोवत जागत सरिखुं ध्यान, करे वखाण तस साचुं ज्ञान ॥ ७ ॥ हितशिक्षा ए रूपत्ते कही, धर्मकथा सांजलयो सही ॥ शक्ति होय तेहवुं श्राद रे, करया विना जग को नवि तरे ॥ ८ ॥ ३३४ ॥

प्रेमशुं ए ॥ ३ ॥ जमणो पग घरमांहे मूके, उंबरो चांपे त्यां नवि थूंके, वदन पखाले प्रेमशुं ए ॥ ४ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मौनवंतने निश्चल वली, सज्ञा करे तर्जनि आंगुली ॥ पेढी दंत घसे नरराय. जिम बत्रीशे वलिया थाय ॥ १ ॥ पछे पुरुष ते दातण करे, कणज क्षी ल कणयरनुं सिरे ॥ वडलो खेर बीयो मालती, निं चे रोग रहे नहिं रति ॥ २ ॥ वांकुं गांठ नाहिं ज्यां वली, जाडुं अस्युंज टची आंगुली ॥ द्वादश अंगुल दीरघ जाण, अनामिकाने टचि चिच राख ॥ ३ ॥ जिमणे पासेंथी नर करे, पोलुं शुकुं दुर्गंध परिहरे ॥ व्यतिपातने आदित्य वार. ग्रहणसमय नहिं दातण सार ॥ ४ ॥ आठम नोम ने चतुर्दशी, पडवे दातण म करिश घसी ॥ अमास पूनम ने संक्रांति, दंत न घसवा नव एकांत ॥ ५ ॥ करे कोगला त्यारें बार, उंलि तणो कांइ नहिंज विचार ॥ कनक रजत तरु उंलें करे, वांकी कांटाली परिहरे ॥६॥ अंगुल दश नी ते राखनो. दातण करि आगल नाखतो ॥ पछे ।क्रमां नामे नीर, गजनी परें नम होय शरीर ॥७॥ मुख सुगंध ने नावे पली, इंद्रिय निर्मल तेहनां वली॥

उत्तर पश्चिम नणी, शास्तरमांहे त्रण दिशि सुणी ॥ वेसी पुरुषने दातण करे, जीव जंतु पहेलुं मन धरे ॥ १७ ॥ एम नांख्यो दातणनो नेद, सुणो पुरुष करी ऊंघ निषेध ॥ ऋषन कवि कहे हित शिक्षाय, ऊंघे तेहनो अक्षर जाय ॥ १८ ॥ आंखें अंजन सुरमा तणुं, करतां निर्मल लोचन घणुं ॥ थाको जो जन उजागरो करी, ज्वरनो धणी मूके परहरी ॥ ॥ १९ ॥ मस्तक दाढी ऊंले नित्य, पूर्वदिशे त्यां धारे चित्त ॥ वे हाये माथुं नवि खणे, खरड्यो हाथ न दे शिर तणे ॥ २० ॥ आरीसो नित्य जोजो जाण, मांगलिक महोटुं एधाण ॥ पूरव सामो रहिने जोय, मेल नर्यो म म निरखो सोय ॥ २१ ॥ निशा समय नर जोवे कोय, आयु हीण होये नर सोय ॥ ... करतां पण म म जोय, वदन पखाली निरखो सोय ॥२२॥ आरीसो जोतां जो कहिं, धड उ... शिर दीसे नहिं ॥ पखवाडे तस मरणज होय, ... नर चेते सहु कोय ॥ २३ ॥ अंबु तेलअने तर... तिहां मुख म जुउ नरने नारि ॥ रुधिर मातरा नवि जोय, क्रोधीने आय घटतुं होय ॥२४॥ ...लो शरशव दहिं घीय, वीलां फरसे पु

दीपे काम अपारो ॥१०॥ अग्नि वल दीपे सहि, तेज कांति वधारे ॥ खरज थाक मेल ऊंघडी, तस नासे त्यारें ॥११॥ परसेवो वलणज टले, धन पाणी गाढुं ॥ सोय अंघोल करे सही, जे न करे टाढुं ॥ १२ ॥ गलाथकी हेठुं धूवे, वली ऊने नीरें ॥ निरतिवाई शिर धुवे, सुख होय शरीरें ॥ १३ ॥ बीज छठ आठम दिनें, दशमी नवि नाये ॥ तेरश चउदश पूनमें, अमासें नवि नाये ॥ १४ ॥ आदित्यें नावे नहिं, नर होवे तापो ॥ सोमें कांति थापे सही, मंगल मृत थापो ॥ १५ ॥ बुद्धें धन पामे सही, गुरु दरिद्री थाय ॥ शुक्रें दोजागी सही, शनि सिद्धिज थाय ॥ १६ ॥ नागा चिंतातुरा नरा, जइ आव्यो गाम ॥ वस्तु साथें जोजन करे, नाहण नहिं तस ठाम ॥ १७ ॥ अलंकार पहेरे नहिं, करे मंगल कामो ॥ सजनने वलावी वले, नाहण न करे तामो ॥ १८ ॥ ॰॰ नावुं जे कह्युं, तिहां जांखि नायो ॥ अंघोल नित्य करवी सही, तिहां न कही नायो ॥ १९ ॥ तेल न चोले नर वली, दिन होय जो पडवो ॥ ती . ञूमि न चोलियें, वारया नर सरवो ॥ २० ॥ ... दृष्टि नहिं, वैधृत संक्रांतें ॥ तेल न चोले

जिम नवि लागे विंडुर्ज रे ॥ ५ ॥ कंठें हृदें उर पूजियें,नवे तिलकनुं मानो रे ॥ गानो रे ॥ करतां पूजे ते तरे ए ॥ ६ ॥ चंदन विण पूजा नहिं, वासपूजा परजातें रे ॥ बहु जातें रे ॥ मध्यान्हें पूजा कही ए ॥ ७ ॥ दीप धूप संध्यासमय, दक्षिण अंगें दीवो रे ॥ जीवो रे ॥ वाम जागें धूपज करो ए ॥ ८ ॥ फल सुंदर निवेदशुं, जिनआगल ते ढोए रे ॥ खोए रे ॥ पातक अग्रपूजा करी ए ॥ ए ॥ दक्षिण अंग वेसी करी, चेइवंदन पण कीजें रे ॥ जाविजें रे ॥ त्रण अवस्था त्रण वारो ए ॥ १० ॥ त्रण अवस्था जावजे, जिन छद्मअवस्था ज्यारें रे ॥ त्यारें रे ॥ जन्म राजनी दीक्षा वली ए ॥११॥ प्रतिमा परिकरमां लिख्या, कलशा सुर आकारो रे ॥ धारो रे ॥ जिनमस्तकें सुर गिरि जई ए ॥ १२ ॥ सुगंध नीर लेई करी, कीजें देव पखालो रे ॥ वालो रे॥ ताम अवस्था जावियें रे ॥ १३ ॥ कुसुमदाम सुर शिर धरे, पुष्फें करी पूजीजें रे ॥ धारीजें रे ॥ ताम अवस्था राजनी ए ॥ १४ ॥ मुख मस्तक केशज विना, दीक्षा अवस्था एहु रे॥ जेहु रे॥ श्रमण हुवा जिणवर वली ए ॥ १५ ॥ केवल अवस्था जावियें, प्रातिहार

त्तर नेद पण लहियें रे ॥ कहियें रे ॥ आठ पंच अ ण विधि जला ए ॥ २७ ॥ ए जिन पूजा विधि क ह्यो, नावें जीव जव कीजें रे ॥ दहीजें रे ॥ पातक रूपचन्द कहे सही ए ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ४३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनपूजा जस घर नहिं, नहिं पात्रें जिहां दान ॥ ते केम पामे बापडो, विद्या रूप निधान ॥ १ ॥ तिलक नहिं केशर तणां, घृत दीवो नहिं ज्यांहि ॥ तास जनम लेखे नहिं, ते घर नहिं घरमांहि ॥२॥ शिव देउं तुम शुन परें, जिनपूजा यो दान ॥ दानें जिनपदवी लही, चक्री देव विमान ॥ ३ ॥ एक दान तसु पंच नेद, विवरी कहुं विचार ॥ अनय सु पात्र कीर्त्ति लही, उचित अनुकंपा सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ सुरसुंदरी कहे शिर नामी ॥ ए देशी ॥

॥ राग मालवी गोडी ॥ अनुकंपा महोटुं दान, गज आणी हैडे शान ॥ शशलो उगार्यो सार, धन्य धन्य तुं मेघकुमार ॥ १ ॥ श्रेणिक तणो सुत होय, शुन संयम लेनो सोय ॥ पाम्यो अनुत्तर जेह विमान, प लखुं अनुकंपा दान ॥ २ ॥ धन्य बाहुबली अव तारो, उचितदान तणो दातारो ॥ हुउं नरतेसर



केरी, तेणें टाली चिहुं गति फेरी ॥ १२ ॥ सिद्धांत तणो जाणनारो,प्रतिलाभी पामो जव पारो ॥ लोचकी धो मुनिवर माये,प्रतिलाभी पुण्य ल्यो सायें ॥१३॥ महोटुं पारणा केरुं दानो, घरे होय अखूट निधानो॥ उत्तर वारणे दान तुं देजे,धननो लाहो एम लेजे ॥ ॥ १४ ॥ गुरु आवे उभो थाजे, गुरुनी साहामो पण जाजे ॥ दान देइ वोलाया जाय, तेहने पुण्य घणेरुं थाय ॥ १५ ॥ मूके बेसणुं करी परणामो, वली पूछे गुरुने कामो ॥ पछे जगति करीजें जलेरी, आशा पहोंचाडे मन केरी ॥ १६ ॥ नारकी सुर ति र्यचमांहे, कांइ दान न देवुं प्राहे ॥ उत्तम नव मान व सारो, दान पाम्यें भिग् अवतारो ॥ १७ ॥ दान पा खें सहे दारिद्रो,होय अपजश ने बहु छिद्रो॥दुर्भागी दास ते थाय, घणुं परद्यायें कूटाय ॥ १८ ॥ दीन दुःखियो रांको रोगी,परपरानव सहे ते योगी॥तेणे नर उत्तम चेतो, रखे रहेतो थोडुं देतो ॥ १९ ॥ न गयो धन सेई कोई, रावण ऋद्धि चाल्यो खोई॥ नवे नंदनें मुम्मण शेठ, करपी गयां नीचा नेठ ॥२०॥ जुवो करपीनी ए पंथाणी, सागरें सागर लीधो ताणी ॥ कपिला दासी मनि मूंझाणी, थइ करपी



रुपनें चिह्ना ॥ उचित सहुकोनुं साचववुं, अणदी धे नवि वावरवुं ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ४६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर जोइ जोजन तणो, अतिथि पहोतो वार ॥ अण दीधे आपें जिम्यो, गयो ते वहु जव हार ॥ १ ॥ सखि ए बावन अक्षरा, जाणो इका वन कंत ॥ एक ददो बाहिर गयो, ते ऊखंत ऊखंत ॥ २ ॥ गजा विघोर तटक करी, कज्जल सम मुह वन्न ॥ एणी पेरें बप्पिहायकुं, ऊलो ते जलहर दिन्न ॥ ३ ॥ थोडुं दान सोहामणुं, जे दीजें हरपेण ॥ पठी कालविलंबडे, शुं कीजें सहसेण ॥४॥ दान संव त्सरी जिन दिये, मिले पुरुप करी आश ॥ जिन वरसे तिहां मेघ परें, कोइ न जाय निराश ॥५॥ तुंगिया नगरी श्रावक जला, अजंग डुवार कहाय ॥ उत्तम मध्यम सहु दिये,देतां नवि शंकाय ॥६॥ रायपसेणी केशी ऋषि, वाख्यो परदेशी राय ॥ पहेलुं रमणिक थइ करी, पछें अरमणिक म थाय ॥ ७ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ रमणिक पुरुप थायो सहु कोय, देई जमतां पुण्य सबलुं होय ॥ विवेक जलो हैयामां धरे, सकल

वस्त्र न बांधे शिरें ॥ एक वस्त्रें न करे आहार, अर
विन पणे भोजन नहिं सार ॥ १० ॥ लोलुपवे हो
पग रासडां, तज अपसकण अण ए वडां ॥ केवल
भूमि नहिं राटले, पूर्व दिशि बेसे पाटले ॥११॥ उ
नर गाज्यामो आमण जले, पग नवि वीजें नर पाटले ॥
मेलो भूखो नाग्यो थाल, न जमे नर जे बुद्धि विशाल
॥१२॥ अत्यंत माकिण ने कूलग, छण नजरें न जमे शुभ
नरा ॥ जलुवंतीयें फरस्युं जेह, उत्तम आहार करे नहिं
तेह ॥१३॥ पंखी श्वान ने श्रीजी गाय, तेहनुं मुंदर्युं
नर नवि खाय ॥ नग्न नजरें पापी पाडियु, ते भोजन
उत्तम छांडियु [illegible] नहिं ॥ १४ ॥
जिमता शब्द करे नहिं एक, [illegible] ना सयल
विवेक ॥ सर्व [illegible] मुख थाए, [illegible] बेसणुं ॥ १५ ॥ अणचाख्यो ने भोजन करे, [illegible]
सघलुं [illegible] ॥ [illegible] न लागे धीर,
भोजन आदे न पीवे नीर ॥ १६ ॥ अति मद होवे
तुम नथी [illegible] अमृत नथी ॥ [illegible]
[illegible] प्रथानपुरुष नथी [illegible] ॥ १७ ॥
प्रथम वस्तु [illegible] [illegible]
नथी ॥ छेहे तीखा कडुवां [illegible] नथी [illegible]

तेम आहार ॥ १८ ॥ शूल रोग जेहने यसी होय, विदल आहार करे नहि सोय ॥ कुदि न जुवे मांसज नखी, घृत ठंडे जे ज्वरनो धणी ॥ १९ ॥ पुरुष घणुं नवि पीजें नीर, विषमुं आसन ठंडे वीर ॥ वडी लघुनी शंका परिहरो. दिवसें सुवुं ते म म करो ॥ २० ॥ रातें जागवुं एह कुयोग. ए पट घोर्से होये रोग ॥ गरणां चारे निद्राणुं नजे. जल तडको ने जोग नवि भजे ॥ ॥ २१ ॥ वर्षारतें नर खारुं खाय. शरद रतें घट पाणी पाय ॥ दूध अंबु हेमंत रतुमांहि. तेहने रोग न थावे प्राहि ॥ २२ ॥ शिशिर रतें कटु खाटुं खाय, वसंत रतें घृत जिमे नरराय ॥ ग्रीष्म रतें गलियुं ते सार. रूप कांति बल वधे अपार ॥ २३ ॥ अति ऊनुं ते बलने हरे, अति टाढुं ते वायुने करे ॥ खाटुं खारुं तेज अवगणे. अति कामी जीविनने हणे ॥ ॥ २४ ॥ हेमंत रतें नर सेवे काम. शिशिरें तडको ते अभिराम ॥ वसंत रतें नर सेवे वन्न. ग्रीष्म रतें जल पीये सुख तन्न ॥ २५ ॥ वर्षारतें घर सेवे शुरू, शरद रतें गवरीनुं दूध ॥ आषाढ मास श्रावण जब होय, तव पंथी म म चालो कोय ॥ २६ ॥ नादरवो ने आशो मास. तव पाणीनो करे अन्यास ॥ कार्ति

भोजन आदरे, खोट वखाए तेहनुं नवि करे ॥ ४४ ॥ एक चलु लेई कोगलो, उतारे घटमांहि निर्मलो ॥ बाकी कोगला नाखे सही, पशु परें जल पीवुं नहीं ॥ ४५ ॥ पीतां पाणी रहे वली जेह, भूमि उपर लेइ नाखे तेह ॥ जल जाजुं नवि पीजें वीर, मोढे बोक न दीजें धीर ॥ ४६ ॥ भोजन करीने कहे नो कार, चैत्यवंदन ते जगमां सार ॥ भीनो हाथ बीजा हाथशुं, न घसे पाय अने मोहशुं ॥४७॥ फेरे हाथ ढीचण पर धरे, भोजन करी आलस परिहरे ॥ वडी नीति तजे तिणि वार, नवि बेसे उघाडे बार ॥ ४८॥ सनान शीद करे गुणवंतो, डावे पासें सूवे जागतो ॥ के सो रुगलां भरवां तेह, जमी बेसतां वाधे पेट ॥ ४९॥ चित्तो सूतो बलखो थाय, डावे पासें वाधे आय ॥ शास्त्रेंथी भोजनविधि लही, रुपजें तुम हितशिक्षा कही ॥ ५० ॥ सर्वगाथा ॥ ५२२ ॥

॥ ढाल ॥ सांसो कीधो शामलिया ॥ ए देशी॥

॥ राग गोडी॥एणी परें आरोगीने उठ्यो, खावां फोफल पान ॥ अति बलवंत होये तंबोलें, वाधे देहनो वान ॥ १ ॥ सबल सवीर्यने पित्तकर होये, शमे कफ ने वाय ॥ स्वर वाधे ने अगनी दीपे,मुख

थी साथ ॥ रूपचंदास हितशिक्षा जांखे, कहे तं थोलह जाव ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥
॥ ढाल ॥ पाट कुसुमजिन पूज्य परूपे ॥ ए देशी॥
॥ क्षौर तणा हवे जाव जणीजें, चोथे नहिं निरधार ॥ छठ आठम ने चउदश टालो, अमास नहिं दिन सार ॥ हो जविका, कीजें आप विवेको॥ए आंकणी ॥ १ ॥ त्रण वार तजे नर निश्चें, मंगल शनि रवि जेह ॥ संध्या रातें नख उतरावे, मूरख जगमांहिं तेह ॥ हो ज० ॥ २ ॥ विद्या आरंज उत्तम जारे, क्षौर तजे नर त्यारें ॥ यात्रा रणें परवें परिहरजे, पंडित पुरुषा वारे ॥ हो ज० ॥ ३ ॥ पोताने हाथे नवि चूंटे, नवि वींणे वलि आप ॥ आप लूगडुं नवि मांमीजें, होय दारिद्रनो व्याप ॥ हो ज० ॥४॥ स्नान ते करवुं एतें ठामे, जोग जज्यो जस विमन ॥ चिताधूम ने नख उतरावे, जेहनें जूंडुं स्वप्न ॥ हो ज० ॥ ५ ॥ वृक्ष सेवालें ढांक्युं पाणी, त्यां नर नवि अंघोलो ॥ दोहिलो पेशी मेले नीरें, नर नाये ते जोलो ॥ हो ज० ॥ ६ ॥ टाढे नीरें अंघोली पुरुषा, न जिमे उनुं अन्न ॥ उने जलें टाढुं अन्न ठंमे, एम सुख पामे तन्न ॥ हो ज० ॥ ७॥ स्नान करी जस तन गंधाये, अने

यार न जोवुं तदा ॥ जूनुं मलिन फाटुं लूगडुं, त जीयें कंफियुं जिहां थीगडुं ॥ ६ ॥ करे तेह लख मीनो नाश, होय अलछी घर तेहने दास ॥ न गमे नर नारी गुणवती, तेहनी दोलत नहीं दीपती ॥ ७ ॥ मूरख ठे ते सांधे पाघडी, तेहने आपद आवे अडी ॥ म म सांधे कहियें फालियुं, जो तुनें वाहा लुं मालियुं ॥०॥ ए में जांग्यो वस्त्र विचार, सुणो सोय जे नहीं दातार ॥ कांइक काज गुरु कीजियें, थोडुंक मुनिवरनें दीजीयें ॥ ए ॥ मन पुर्बल नो एक मुहप त्ति,तेणें ताहरी होय शुन्न गति ॥ ए शीखामण दी धी रंक, वडा पुरुषनो श्यो ठे अंक ॥ १० ॥ रत्न कं बल दीधा अतिसार, सोवन लख्ख नस मूल अपार ॥ विविध वस्त्र तणा दातार, देई सफल करे अवतार ॥ ११ ॥ द्विज जुजंगम आगें हुउं, वस्त्रदाननो दाता जुउं ॥ शुन्नगतिनो नजनारो थयो, तेणें उपदेश में तुमने कह्यो ॥ १२ ॥ वस्त्रविचार में विवरी कह्यो, जे पण कांही शास्त्रमांहे लह्यो ॥ रूपचंदास हितशिक्षा कहे, पंकित ते साचुं सद्दहे ॥१३॥ सर्व गाथा ॥५५७॥ ॥ ढाल ॥ दिन दिन समरुं श्री महावीर ॥ ए देशी ॥ ॥ त्रिपदी ॥ पुरुष सद्दहे जे शास्त्र विचारो, पगवाह

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ मूरखपणुं सहि तेहनुं टले, जे पंमितने पासें मले ॥ आगमवेदी जेद ते कहे, नीति शास्त्रनो मरम ते लहे ॥ १ ॥ नीति शास्त्रें बोल्युं पवित्र, पुरुष धरे शिर उपर छत्र ॥ जल तडको नवि लागे वाय, शोजा तणुं वली कारण थाय ॥ २ ॥ पुरुषें दंम धरे चो हाथ, जाणुं मित्र मल्यो संघात ॥ श्रम कामें जय वारे तेह, हींमंता सुख आपे देह ॥ ३ ॥ वांको दंम न आवे काम, पहोलो परिहरवो तेणें ठाम ॥ शल्यो खंम दह्यो शुं कीजियें, हाथे दंम ते नवि ली जियें ॥ ४ ॥ एक गंठी लाठी ते सार, करे बे गंठी वेढ अपार ॥ लाज त्रिगंठी आपे अति, चार गंठी शरणे राखती ॥ ५ ॥ पंच गंठी लाठी जय हरे, षटगंठी जय उजो करे ॥ जे लाठीने गंठी सात, ग्रहतां रोग रहित दिन जात ॥ ६ ॥ आठ गंठी लाठी धन देह, नव गंठीथी जस वाधेह ॥ दश गंठीथी सीजे काज, एकादश गंठीयें राज ॥ ७ ॥ अंगुल चार धुरि मूकी करी, कापि लीये लाठी वन फरी ॥ आंगुल आठ उपर वृद्धिवती, वनशूकी लाठी गुणवती ॥८॥ अस्यो दंम करमांहे धरे, राजा राजजवनें संचरे ॥ मंत्रीशर

मांकवियें जाय, धन मेलवानो करे उपाय ॥ ए ॥ वाणिक पुत्र वखारें जई, वणज करे पोतानो सही ॥ केता हाटें करे व्यापार, व्यवहार शुद्धिथी ऋद्धि अपार ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऋद्धि घणी नस मंदिरें, न करे अकर अन्याय ॥ राजभवनें वेर्मी करी, ऋद्धि मेले राजाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ते गिरुआ जाई ते गिरुआ ॥ ए देशी ॥

राजा राजसभायें वेसे, मांकवियें मंत्रीशो रे ॥ वाणिग हाट वेशी धन मेले, धर्म न दुःखे लेशो रे॥ ते नर महोटा ते नर महोटा, न्याय न करता खोटा रे॥ ते नर० ॥ ए आंकणी ॥१॥ धर्म विरुद्ध करे नहिं राजा, मध्यस्थपणे करे न्यायो रे ॥ दारिद्री व्यवहारी उपरें, दृष्टि सरिखी गयो रे ॥ ते नर० ॥ २ ॥ कल्याण कटकपुर केरो स्वामी, नाम यशोभद्र रायो रे ॥ नीतिघंट बांध्यो तेणें घहारें, करतो निरतो न्यायो रे ॥ ते नर० ॥ ३ ॥ राजतणी जे अछे अधिष्ठायिका, परीक्षा कारण आवे रे ॥ यह सवछा गयरी रूपें, राजमार्गें जावे रे ॥ ते नर० ॥ ४ ॥ राजपुत्र रथ खेडे वेगें, चांपे वछना पायो रे ॥ मूर्छे

वाछडो कणमां त्यारें, रूपें ग्रसके गायो रे ॥ ते नर०
॥५॥ लोक कहे तुं जा राजा कने, न्याय करावा काजो
रे ॥ जइ दरबारें घंट बजायो, सुणीयो ते महार
जो रे ॥ ॥ ते नर० ॥६॥ जोजन करतो राजा उठ्यो
दीठी आंगणे गाय रे ॥ पूछ्युं तुजने कोण पराजवे
वछ देखाड्यो राय रे ॥ ते नर० ॥ ७ ॥ राय कहे
तव जोजन करशुं, मलशे जब रथवालो रे ॥ कुम
कहे वछ ए में मार्यो, दंम दीजे नृपालो रे ॥ ते
नर० ॥ ८ ॥ स्मृति शास्त्र तणो जे समजु, पूछ
दंम विचारो रे ॥ राजयोग्य एक पुत्र तमारो, श्यो
कीजें तस प्रहारो रे ॥ ते नर० ॥ ९ ॥ कोनो पुत्र
ने राज्य ते कोनुं, न्याय करेवो महारो रे ॥ पांच
बोल साचे ते राजा, तांचे नरपति त्यारें रे ॥ ते
नर० ॥ १० ॥ डुष्टदमननें संत पोखवो, न्यायें जंडे
जंमारो रे ॥ पक्षपात करे नहिं कहेनो, करे मित्र
नी सारो रे ॥ ते नर० ॥ ११ ॥ तेणें कारण मुज
न्याय करेवो, पंडित बोल्या त्यारें रे ॥ जेणें काम
कर्युं होय जेहवुं, तिम करी तेहने मारे रे ॥ ते
नर० ॥१२॥ वेगें वहेल श्रणावे राजा, कुमर सुया
र्यो त्यांहि रे ॥ राय कहे रथ खेडो वेगें, कोइ न

नग्न ने जटाधारी. वस्त्रहीण नर पेखि ॥ थयो मु
मलें करी नारी. उदरें गृह्य कपाल करी ॥ अर्धचं
दे पाठो करी. कवि ऋषभ कहे नर वोलियो. कृप
नंद देखी करी ॥१॥ नंद सरिखा नव लख गय
करी पाप अन्याय ॥ न्याय रीति राखे जिको. ते
त्तम विरलाय ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ८७७ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जे उत्तम जगमां परधान. ते न करे अन
विज्ञान ॥ निर्लोभी अति योगी सार, जेम
वयने अजय कुमार ॥ १ ॥ व्यवहार शुद्ध राखे
णियो, ते धरमी जगमां जाणियो ॥ द्रव्य तणी प
चिंता करे. धर्म तजी ने नवि आदरे ॥ २ ॥ म
वचन कायायें करी, व्यवहार शुद्धि राखे मन ध
॥ देश विरुद्ध वाणिग परिहरे, धन उपार्जवा उ
म करे ॥ ३ ॥ विषम वस्तु जग शी कहेवाय,
द्रव्यें नवि थाय ॥ आजीविका नर करे अपार
हेना जांख्या सात प्रकार ॥ ४ ॥ व्यापार विद्या
धन होय, कर्षण पशुआं पाले कोय ॥ विज्ञा
सातमी जीख, आजीविकानी ए तुज सीख
॥ गाडें आन करिणमां सार, वणिग करे है

धरी ॥ १४ ॥ जिहां वढतां होय मानव दोय, पासें जइने तुं म म जोय ॥ इसी बुद्धि लेई घरें जाय, हरख्यो पिता मंत्री तिणें ठाय ॥ १५ ॥ पाछो पाछो सुत तिहां गयो, बुद्धि आपी द्रव्य पाछो ग्रह्यो ॥ शीख दीधी तेणें गहगही, वढे दोय त्यां रहेजे सही ॥ १६ ॥ नृप तणा नर वढता दोय, मदन कुमर पासें जई जोय ॥ कह्यो साखियो तेह कुमार, नृप आगल तुं कहे विचार ॥ १७ ॥ सुभट दोइ जुजु आ जई, वल्या पुरुष धनाने कही ॥ माहारुं कह्युं नवि बोलशे, मदन तणुं तो मरणज थशे ॥ १८ ॥ धनो गयो तव बुद्धिने हाट, बुद्धि एक आपो पुण्य माट ॥ दाम पांचशें पहेला लिया, सुभट साख उपर बुद्धि दिया ॥ १९ ॥ नृपना नर जय आवे घरे, तब घेहलो थई घेहलो करे ॥ इसी बुद्धि ले हेने कह्यो, घर आवी तसु घेहलो कह्यो ॥ २० ॥ पें तेड्यो जेणी वार, तव घेहलाइ करे अपार ॥ ति नृप कहे गांडो एह, किसी साख नर देशे तेह ॥ २१ ॥ विघन टल्युं ने हाम कल्याण, बुद्धि तणी जगमांहि प्रमाण ॥ एम पांचशें बुद्धि ग्रहे, एहने ...म नर सहु कहे ॥ २२ ॥ हाथें काम करे या

गुणना ज अग जाण. गुणी नरनां करिये वखाण ॥ क्रूर व्यसनी मूढ गंगोलां. लोभी अन्यायी मूकी दीयां ॥ २८ ॥ राजमनायें वेसे जाय. अनि टूक. ड अबाधा थाय ॥ अनि वेगलो जइ वेसे सेह का पण दीण नर कहियें तेह ॥ २९ ॥ आगउ अन्य पुरुष नवि गमे, पाछल सुख जोवा मन रमे ॥ [illegible] वेसतां वानर थाय, वराबरी करतां अवड़ा [illegible] ॥ ३० ॥ राजाने नवि कहियें काम [illegible] तरस्यो जाम ॥ शयन समे [illegible]

घाशे एतो त्याजथी, गलियामांहि घेरी रे॥जेह०॥१२॥ जीसें न होय व्यवहारीयो, पेट कवीय जराय रे॥ व णज करंतां धन मिले, जलो एह उपाय रे ॥ जेह० ॥ १३ ॥ कमला कमलज वासिनी, कृसने हृश्ये वा स रे ॥ शोधंतां सोय जो नवि जडे, जडे वणज तिहां ग्यास रे ॥ जेह० ॥ १४ ॥ मानव धन देशाका लने, जाग्पने अनुजाय रे ॥ वणज करे माया वली, सुखिया ते बहु थाय रे ॥ जेह० ॥१५॥ पन्नरे कर्मा दाननो, करे नहिं ज व्यापार रे ॥ नियमनी वस्तु वहो रे सही, सूत्र वणज ते सार रे ॥ जेह० ॥१६॥ रजतने हेम नाणां लिये, एवा जेह व्यापार रे ॥ पुरुष धर्मी तेही आदरे, जिहां नहिं पाप लगार रे ॥ जेह० ॥ ॥ १७ ॥ दुर्भिक्ष काल होये जदा, गर्म ने करे वणज रे॥तेल मीठुं तिल वेचनो, लीलां शाक ने कणज रे ॥ जेह० ॥ १८ ॥ पुरुष कुवणिजने जो करे, लाज वीक धरंत रे ॥ ममुग थडे निज निंदतो, मनि साधु करंत रे ॥ जेह० ॥१९॥ इपन दिये हिन शीलवंही, रहे जो मन गाम रे ॥ वाणिज नंकुं नुम म म करो, करो पाप कोण काम रे ॥ जेह० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६५५ ॥

रुपा० ॥ ७ ॥ कूडां काटलां तुं परिहरजे, देखीतो ए लाजो ॥ एकें वारे ए शिरनो जाशे, पाघडी साथें गाजो रे ॥ पुरुपा० ॥ ८ ॥ कूडो करद्दो म म काढिश जोला, सम म म खाइश जाझा ॥ परधूतीने पिंम जे जरता, नहिं परमारथें ताजा रे ॥ पुरुपा० ॥ ए ॥ वदली वस्तु म आपीश कोने, ठेतरतां ठेतराइश ॥ दूध चीलाडीनें दृष्टांतें, मस्तक बुंधूं खाइश रे ॥ पुरुपा० ॥ ॥ १० ॥ देव गुरु धर्मतणा सम मूके, सत्यनो चीलो राखे ॥ जेल संजेल म करजे वस्तें, कांइक साचुं जांखे रे पुरुपा० ॥ ११ ॥ खोले माथुं मूक्युं जेणें, तेहशुं म करीश कूडुं ॥ धर्मि पुरुपने जो तुं वंचिश, तेणें लाजें तुं बूडो रे ॥ पुरुपा० ॥ १२ ॥ देव गुरु ठाकुर म म वंचो, चोथो पुरुप सुंहालो ॥ जो कोइ मरण विमासे हृइये, नो म म वंचे वालो रे ॥ पुरुपा० ॥ १३ ॥ कोनो पङ्ग म म थाइश जाई, नवि पूरेवि साखो ॥ सम म म खाजे धीज तजेजो, ए शीखामण राखो रे ॥ पुरुपा० ॥ १४ ॥ वणज व्यहार कह्यो में मांकी, रूडे डुर्मति ठांमी ॥ रूपज कहे हितशिक्षा सुणे, तस शिर देवनी कांकी रे ॥ पुरुपा० ॥१५॥६७०॥

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ एक मनां गुणजो नर सार, बुद्धि करीकरजो व्यापार ॥ निर्बुद्धि जे नांखो होय, वणज करीधन खोवे सोय ॥१॥ जीणदत्त सुत नांखो नाम, जोस पणानुं करतो काम ॥ अन समय शिक्षा दिये बाप, पुत्र तणी समजावे आप ॥ २ ॥ तेत वाडी तुं सघले करे, द्रव्य देइ स म जाये घरे ॥ स्त्रीनें तु बांधी मार जे, मिष्ट भोजन तणी भुख भोगवजे ॥ ३ ॥ गाम गाम घर करवुं घणुं दुःखमांहे गंगा कांठा खणे ॥ संदेह पडे पामर्चीपर जजे, सोमदत्त मित्र तणी पू छजे ॥ ४ ॥ सरस बाप तेणे आदर्या, अणसमजु तेणे अवला कर्या ॥ धन सहुने निःधन थयो.सोम दत्त मित्र तणे घर गयो ॥ ५ ॥ स्वामी तातें जे मु ख कह्युं, ते करतां धन सघलुं गयुं ॥ गजदंतें कीधी में वाडी, सोय लोक गया सहु काढी ॥ ६ ॥ शुद्धि आपी माग्या विण गइ, स्त्री बांधी मारी नवि रही ॥ मीठे खाधे रोग अत्यंत, सूते काम सहु विणसंत॥७॥ गाम गाम घर लोके ग्रह्यां, गंगाना तट में नवि लह्यां ॥ बुद्धिहीण खोया में दाम, धन विण पूजा न लहे राम ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ६०६ ॥

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ एक मनां सुणजो नर सार, बुद्धि करीकरजो व्यापार ॥ निर्बुद्धि जे नोलो होय, वणज करी धन खोवे सोय ॥१॥ जीर्णदत्त सुत नोलो नाम, नोल पणानुं करतो काम ॥ अंत समय शिक्षा दिये बाप, पुत्र नणी समजावे आप ॥ २ ॥ दंत वाडी तुं सघले करे, द्रव्य देइ म म जाये घरे ॥ स्त्रीनें तुं बांधी मार जे, मिष्ट नोजन नखी सुखें सोवजे ॥ ३ ॥ गाम गाम घर करवुं घणे, दुःखमांहे गंगा कांठो खणे ॥ संदेह पडे पाडलीपुर जजे, सोमदत्त मित्र नणी पूठजे ॥ ४ ॥ सकल बोल तेणें आदस्या, अणसमजु तेणें अवला कस्या ॥ धन खूटयुंने निर्धन थयो.सोम दत्त मित्र तणे घर गयो ॥ ५ ॥ स्वामी तातें जे मुऊ कह्युं, ते करतां धन सघलुं गयुं ॥ गजदंतें कीधी में वाडी, सोय लोक गया सहु काढी ॥ ६ ॥ ऋद्धि आपी माग्या विण गई, स्त्री बांधी मारी नवि रही ॥ मीठे खाधे रोग अत्यंत, सूते काम सहु विणसंत॥७॥ गाम गाम घर लोकें ग्रह्यां, गंगाना तट में नवि लह्यां ॥ बुद्धिहीण खोया में दाम, धन विण पूजा न लहे राम ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ६०६ ॥

कर पोयणशुं मित्तडी, जे सरसी शूकाय ॥ए॥ कम
ल कपूर चंदन जिस्यो, पिता तणो तुं यार ॥ निज
बालक जाणी करी, सोमदत्त कर सार ॥१०॥६ए६॥

॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ सोमदत्त कहे सुण गुणखाणी, दांतवाडी ते
मीठी वाणी ॥ आपी धन मागण म म जजे, दोढूं
गरेहणुं तुं राखजे ॥१॥ बांधी माख्या तणो विचार,
ज्यारें ठोकरानो परिवार ॥ मीठी वस्तु खावी मन
धरे, जिहां मान तिहां जोजन करे ॥२॥ सुख जरी
सूवुं ते एम कहे, रूडे गामें जइने रहे ॥ निद्रा आवी
सूवुं शिरें, गाम घर ते मित्र एम करे ॥ ३ ॥ गंगा
गाय बंधाये ज्यांह, गमाण आगल खणजे त्यांह,
मित्र कहेण ते सघला करे, खणी जूमी धन घरमां
धरे ॥४॥ सुखी हुर्ज ते बुद्धि करी,धन आव्युं घर पाछुं
फरी ॥ गरेहणुं जाजुं लेई धन देह, उधारो कहि
यें न करेह ॥ ५ ॥ कदाचित् सुपुरुषने जो दिये,अ
त्यंत व्याज तिहां नवि लिये ॥ लोकमांही हेलाये
घणुं, संतोषपणुं जाये आपणुं ॥ ६ ॥ लेनारो पण
तरतज देह, वचन आपणुं शुरू करेह ॥ तस्यो
जार माथे नवि लिये, आगल जातां नाखी दीये

॥ ७ ॥ कदाचित् हुइ धननी हाणि, थोडुं थोडुं दिये निर्वाण ॥ आ जव परजव जे डुःख देह, कोण मूरख रण राखे तेह ॥ ७ ॥ धनआगमनें शत्रुघात, अग्नि रोगनो करो निपात ॥ कन्या दान नें रण ठेदवुं, विलंब न करवो शीघ्रज थवुं ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥१०५॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्रीमरण रण ठेद, विद्या उंषध धर्म ॥ रूप न कहे डुःख ते नथी, पर्वे दिये सुख पर्म ॥ १ ॥ कुपथ्य परिग्रह श्वानमिथुन, पाप करज ने घाय ॥ रण करतां ठ सोहेलुं, निर्वहेतां डुःख थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जो नवि पामे देवा दाम, तो तेहना घरनुं करे काम ॥ करे वृटया तणो उपाय, नहिंकर परजवें डुःखियो थाय ॥ १ ॥ जेंमो ठंट गधेडो दास, थाय बलदियो आणे घास ॥ खांध धोंसरुं खमतो मार, करडे पूठडुं धरतो ज्वार ॥ २ ॥ वींधी नाक परोई राशि, किहां जाईश रे रणिया नाशि ॥ चूके आर पेसारे घणुं, कारण ते मद्दु देवा तणुं ॥ ३ ॥ लेहेणदार विमासे इस्युं, जे कहे देवा नहिं धन किस्युं ॥ उत्तम ते कंइ मागे नहिं, पाप बांधतुं जाणे तहिं ॥

लीजियें ॥१॥ माली तंबोलीशुं प्रेम, उधारे देतां नहिं खेम ॥ सुखडियो सुगंधी सार, उधारानो श्यो व्यापार ॥ २ ॥ नृपति नाट अने पस्ताग, म करिश उधारानो लाग ॥ वांजण वोडो शस्त्रह धार, महिलाशुं म करीश व्यापार ॥ ३ ॥ धर्मीशुं करवो व्यापार, साधर्मिकनी करवी सार ॥ वस्त वोहरावे देई वखार, ए लगपण मोटुं संसार ॥ ४॥ धन आपंतां करे विचार, रहेशे तो ठे नार सुसार ॥ जो श्रावक घर लखमी हशे, साते क्षेत्रने ते पोखशे ॥ ५ ॥ एम जाणीने वणज करेह, मचकोडायो ते नवि देह ॥ ए मुज पुण्यनुं थानक हवुं, एम जाणी धन तें मूकवुं ॥ ६ ॥ द्रव्य म्लेच्छादिक कर रहे, वोसिरावे तो बहु सुख लहे ॥ जो आपे तो पुण्यने ठाम, ते धन नावे बीजे काम ॥ ७ ॥ पडी वस्तु गई जे होय, वोसिरावे श्रावक पण सोय ॥ एम अनंता जवनी देह, घर कुटुंब वोसिरावे तेह ॥ ८ ॥ पापोपकरण शस्त्र अनेक, ठंमे कुक्कड धरी विवेक ॥ नहिं कर चाले पूठें पाप, जगवती मांहे कह्यो जवाप ॥९॥ पारधीयें मृग मार्यो जई, किरिया चारने लागे तहि ॥ धनुष पणठ फल चोथुं वाण, लागे पातक

गहां ॥१८॥ नाम अजय तस आजड थयो, पा
वरपनो जणवा गयो ॥ कहे लोक न वापो जदा
पूठी माय पाटण गयो तदा ॥ १९ ॥ प्रगट्युं ध
ते धरती मांहे, लाछलदे स्त्री परण्यो त्यांहे ॥ कोनि
ध्वज अनुकरमें थाय, त्रण्य पुत्र ते नारी जाय ॥२०
चूंके करमें निर्धन थाय, पुत्र लेई स्त्री पियरें जाय
पोतें एकलो घरमां वसे, अकिक चर्मनी कोथळ
घसे ॥ २१ ॥ जव माणुं ते आपे एक, पोतें दलत
गयो विवेक ॥ पोतें रांधे पोतें जमे, दरिद्र तण
दाडा निर्गमे ॥ २२ ॥ सर्वगाया ॥ ३४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्षण खांभो क्षण वाटलो, क्षण लांबो क्षण
लीह ॥ देवें न दीधा चंदनें, सवे सरीखा दीह ॥ १ ॥
जग शिर अरुकर विधि लिखे, विधि शिर लखिया
केण ॥ रावण घर कोद्रव दले, एम पूठ्युं हणुएण
॥ २ ॥ नलिनी सरोवर घर कियो, दव दाझणा जए
रां ॥ ते दाधी हिमाजलें, पूरवदत्त फलेण ॥ ३ ॥ ना
कर चे ते नवि रहे, दैव करे ते थाय ॥ मञ्छ रयणायर
पारधीयें सांके साथ वेचाय ॥ ४ ॥ अवली गति
सहि ॥ धनु रखे पतीजो कोई ॥ आरंभ्या यूंही रहे,

आजड दाम मूके एक लाख॥लोक घणां ते हांसी करे, हेम कहे एटले नवि सरे ॥५॥ मूक्या मोकला नवलख दाम. अधिके करशुं पुण्यनुं काम ॥ पांचदाम हुंता तस गांठ. इंद्रनील आलीने कंठ ॥६॥ पांच दाम आपी ते लीध, तेहना मणिया जाजा कीध ॥ लाखें मणियो वेचे एक. एम करतां धन हुवुं अनेक ॥ ७ ॥ अनुक्रमें कोटिध्वज थाय. आवी सुत स्त्री लागां पाय. नगरमांहि पस्तायो पडो.मुनिवरने दिये घृतनो घडो ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ७६४ ॥

॥ दोहा ॥

साहसियां लछी मिले. नह कायर पुरुषांह ॥ काने कुंडल रयणमय. काजल लहे नयणाह ॥ १ ॥ सतिया सत्य न छोडियें. सत्य छोडे पत जाय ॥ सतकी बांधी लछमी. वहोत मिलेगी आय ॥ २ ॥ भमरा नाग्वर दाखलां. लांबी चढीने ठेल ॥ काले केतकी फलशे. वली आशे रंगरेल ॥ ३ ॥स०॥७६७॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ रंगें सामिवत्सल करे. जिनवरनी पूजा आदरे ॥ शत्रुकार संभावे सोय. संघ भक्ति वरसें करे दोय ॥ १ ॥ पुस्तक देरांने उद्धरे. वरष चोराशी आउ

परिवार रे, होय निर्दयपणुं अहंकार रे ॥ पात्र देखी होये अप्रीत रे, कटु वाणी ने तृष्णा चित्त रे ॥ २ ॥ आपदायें दीन न थाय रे, विद्यावंतने नम तो जाय रे ॥ खमे समरथ हुई जेह रे, परपीडें दुःखीयो तेह रे ॥३॥ दुःख आवे आतम ज्यारें रे, हर्ष पामे उत्तम त्यारें रे ॥ धन पामे गर्व न होय रे, तेहना देवता पाय धोय रे ॥ ४ ॥ धनवंत होये नर जेह रे, न वढे घणुं कोइशुं तेह रे ॥ घटे लज्जा ने धन जाय रे, ते मूरखमां कहेवाय रे ॥ ५ ॥ ज गमांहे मूरख चार रे, रोगी लोलुपवंत अपार रे ॥ खासी खुखु ने चोरीनो रंग रे, निद्रा जाजी परस्त्री संग रे ॥ ६ ॥ धनवंत कलेशनो अर्थी रे, ए मूरख चारे धुरथी रे ॥ न करो मूरखने साद रे, धनवंत शुं करता वाद रे ॥ ७ ॥ नृप पक्ष घणो बलवंत रे, गुरुशुं न वढे गुणवंत रे ॥ तपशीने चोर रीसाल रे, वढे जे जग मूरख बाल रे ॥ ८॥ महोटा साथें पडि युं काम रे, विनय वचनें करतो ताम रे ॥ पंचाख्या ननो भाव ते लीजें रे, नमस्कार उत्तमने कीजें रे ॥ ए ॥ बलवंतशुं कीजें भेद रे, दीये नीचाने न होये जेम खेद रे ॥ बराबरीनो होय ज्यांही रे, बहु

म करो लखमीनी आश रे ॥ १८ ॥ वडा पुरुषने पूजे ज्यांहिं रे,न्यायनुं धन मंदिर मांहि रे ॥ प्रीति दीसे मांहो मांहि रे, लखमीनुं स्थानक त्यांहि रे ॥१९॥ लेणुं मागतो मीठुं बोले रे, कठिन बोलीने एव न खोले रे ॥ चूकुं कहेतां रीश जराय रे, दीया नमां उठी जाय रे ॥ २० ॥ लज्जा जाये धननी हाणी रे,लांघणो म करो गुणखाणी रे ॥ धनअर्थे न लाघण कीजें रे, साहामाने जमवा दीजें रे ॥ २१ ॥ जमी लाघण करना केना रे, देणदारने जमवा न देना रे ॥ अंतरायनुं पाप अपार रे, दुःख ढंढणा सहि कुमार रे ॥ २२ ॥ मुंहाला पणे होये जेह रे, चूकुं बोले न थाये तेह रे ॥ सुकुमाल बोलीजें जाई रे, तेह दाननी करे रक्षाइ रे ॥ २३ ॥ कवि लहे णुं देवुं थाय रे, जो विमर्षी बहुने जाय रे ॥ न वढे चार होये ज्यांहि रे, सभा केश ते कांकशी मांही रे ॥ २४ ॥ न्याय करनां जे नर चार रे, हइये धरता धरम विचार रे ॥ राग द्वेष धरे नर कोय रे, वेहु पव ते दुःखीया होय रे ॥ २५ ॥ सर्वनो न करे नर न्याय रे, सगा साहमीर्यो केम वृटाय रे ॥ न्याय करनां गुण छे बहुज रे, लोक माने जगमां सहुज रे

जो आपे तो जोजन करुं, विण दीधे नवि पा
फिरुं ॥ जिर्ण वेटीनुं खाधुं अन्न, ते उपर नवि मा
मन्न ॥ ८ ॥ दीये गाल बोले आरडी. सुबुद्धि शेठ
चिंता पडी ॥ गयो चार न्यायवाला कने, आवीने
डायो मने ॥ ए ॥ न्याय करेवा आव्या चार, कुम
रोई तेणी वार ॥ हुं रंका ने अबला वाल. न्याय
रेजो थई दयाल ॥ १० ॥ पुरुष चार विमासे तहिं
पुत्रीवचन ते जूठुं नहिं ॥ पुण्यवंती जूठी नहिं कदा
तात हरामी खोटो सदा ॥ ११ ॥ तेडी पुरुषें पूछ्
साह, केह कांय करो अन्याय ॥ शेव कहे में लीधुं
नथी, म वढुं ते हुं पुत्रीवती ॥ १२ ॥ पुरुष कहे
मानो तमें आज, वढतां रहेशे नहिं तुम लाज ॥
सुता तुमारी वालक रंक. तेहने दीजें सांहमुं दंक
॥ १३ ॥ दया धरीने करजो सार. आपो सोवन एक
हजार ॥ काल जाव जोई त्यां साह. आप्या सोनै
य्या तेण वाय ॥ १४ ॥ लोकमांहि निंदा विस्तरी,
लेई दामने साह गया फरी ॥ न्याय तणा करनारा
जेह, प्रायें जला न होये तेह ॥ १५ ॥ लोकमांही
चाल्यो उपहास.रहे वेगो घर साह विमास ॥ न्याय
करवा नवि जाये फरी. त्यारें वोली निज दीकरी

जाणीने नारी पूछे, तुम कोण कामें आगें जावुं छे ॥ ७ ॥ एक मित्रज बोल्यो त्यांहि, चर्म वहोरिश होये ज्यांहि ॥ बीजो कहे हुं घृतनो अर्थी, वहो रवा नीकल्यो हुं घरथी ॥८॥ जिमाडया घरनी मजा र, चर्म वालो बेठो बाहार ॥ बेहु बोरीने जव आवे, घरे रांधणीनें तव जावे ॥ ए ॥ मांरूयुं बेसणुं ते घर मांहि, चर्म वालो बेठो त्यांहि ॥ घृतवालो बाहेर काढ्यो, मने चिंतवे एह कुहाड्यो ॥ १० ॥ बे मित्र ते पूछे तामो, कां फेरव्यां जोजन ठामो ॥ रांधणी कहे जो घृतवालो, पहेलुं वेठनो सुजिहु सुगालो ॥ ११ ॥ घणां ढोरने जाजुं दुधो, हुनो तव परिणा म विशुद्धो ॥ हवे ढोर ने रुडुं चिंते, घर चोखुं न होय लिपंते ॥ १२ ॥ चर्म वालो चालनां मेलो, ढो र मुश्रां वांछे पहेलो ॥ हवे वांछे पशुआंने आय, जिम चामडां मोघां थाय ॥ १३॥ तेणे वेसाख्यो में मांहि, बेहु समज्या मित्र ते त्यांहि ॥ मन मेलानुं बहु पापो, मन चोखे नरशे आपो ॥ १४ ॥ ८३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मन मेले दल नरकनां, मेले प्रसन्नचंद राय ॥ हज भ्सन निश्चल करी, तिणें जवें मुगति जाय



रीश ॥ विश्वासघाति कृतघ्नी जेह, कर्म चंमाल कह्या नर तेह ॥ १६ ॥ जाति चंमाल कहियें पांचमो, तुम चारे जई तेहने नमो ॥ तुमथी तेह जलेरो होय, रूपजकथा एक जांखे जोय ॥ १७ ॥ ०६१ ॥

॥ ढाल ॥ प्रनु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥

॥ विशाला नगरी ठे ज्यांही, नंदराजा वेगे त्यांही ॥ जेहने जानुमती पटराणी, वोले अमृत मुखथी वाणी ॥ १ ॥ विजयपाल ते सुतनुं नाम, बहुश्रुत मंत्री करे काम ॥ नृपने राणीशुं रंगो, नवि ठंमे तेहनो संगो ॥२॥ सजामांहे पासें वेसारे, मंत्रीसर बोल्यो त्यारें ॥ वेद मीठा बोलो जेह, विण साडे नरनी देह ॥ ३ ॥ गुरु बोले मीठी वाणी, पुण्य चूके उत्तम प्राणी ॥ मंत्री बोले मुखें सार, तो विणसे सहि जंमार ॥४॥ तेणें कारणें कहे परधानो, नथी रहेतुं सजानुं मानो ॥ तुम पासें स्त्री पटराणी, जली सांजलो महारी वाणी ॥ ५ ॥ गुरु अग्नि नरपति नारी, वेगलां फलपति नहिं सारी ॥ ढूकडां रहेतांज विणास, मध्य जागें सेवियें खास॥६॥ पासें वेठे तुमें नहीं फावो, नवि चाले तो रूप लिखावो ॥ एणे वचनें राजा हर्षे, लख्युं रूप ते वेगो निर

पछी कुंअर उठ्यो त्यारें ॥ खोले सुउं तुमें कपिराय, जिम सुखजरें रयणी जाय ॥ १७ ॥ कपि सूतो सो खामांहि, गाजी वाघलो वोल्यो त्यांहि ॥ राजपुत्र तुने नवि खाउं, नाख वानरने लेई जाउं ॥ १८ ॥ नाख्यो वानरो कुमरें ज्यारें,वाघ देवरूपी हस्यो त्यारें ॥ गयो निकली ते मुख फाडी, बेठो रुदन करंतो काडी ॥ १९ ॥ कहे वाघलो हसिय कां रोय, रह्यो जीवतो वानरो जोय ॥ कहे वानरो मानस यान, कृतघनी विधि शी थान ॥ २० ॥ आप वरग नजी परजातें, राचे केना पर नातें ॥ तेहनी गति केह थाशे, तेणें रोतो वानर नासे ॥२१॥ पशु मानवशुं शी प्रीति,कीधी में सबल अनीति ॥ सुणीने लाज्यो तेणे ठाय, थान रें घहेलो कस्यो राय ॥ २२ ॥ जंपे विशमेरा विशमेरा, दीये वनमां घहेलो फेरा ॥ शोधी नातें घरे आण्यो, थयो घहेलो नृपें जाण्यो ॥२३॥ करे औषध जाजां राय, सुत साजो नोहि न थाय ॥ शारदानंदन संभाख्यो, तेहने तो पापीयें मार्यो ॥२४॥ पडहो वजडावे महाराज,अरध राज देउं तस आज ॥ जे टाळे कुंअरने वेला, ते पडहो छबजो घहेलो ॥२५॥ पडहो छबनो त्यां परधानो, वाळुं राज कुंअर

क परें रिद्धि करतां पाप, मरण सही नरकें घ
आप ॥ १४ ॥ पाप पुण्यानुबंधी पण होय, दा
ड़ी नर थाये सोय ॥ जिन मारग पामी होय सुर
संप्रतिराय जिम द्रुमकह रिषि ॥ १५ ॥ पापानुबं
होये पाप, ते दरिद्री सहे संताप ॥ पापें रातो
गति वरे, कालग सूरिआनी परें फरे ॥ १६ ॥ चा
भेदनो भांख्यो मर्म, पामे सुख ते पूरव कर्म ॥ न्या
दुःख ते पूरव पाप, आगल सुख जोगवशे आ
॥१७॥ ज्यां न्याय तिहां लखमी जाण, सुपुरुष न क
परनी हाण ॥ ते घर हाट बजार पण त्यजे, जिह
परिताप परने उपजे ॥१८॥ परना नीशासा जिह
होय, तिहां लखमी सुख न हुवे दोय ॥ उक्ति सुण
पंक्ति मुख जणे, धंधे मैत्री धूरत पणे ॥ १९
सुखें शास्त्रने कपटें धर्म, ते नवि वांछे समने मर्म
कलण थइ स्त्रीने वांछनो, ते दीसे जग दुःखी घणो
॥ २० ॥ पर संतापें वंछे धन, ए पांचे ते मूरख जन
॥ लोक जलो कहे ते विधि करे, सत्यपणुं नर मही
 ॥ २१ ॥ सत्यवादीने शिक्षा दे एह, धन
...ं नवि वांखे तेह ॥ धन वाव्युं मन जाणी रहे
संमही वस्तु न कोने कहे ॥ २२ ॥ स्त्रीनी वा

॥ श्रावक जगत चंदसूरि तणो, तपो तेह द्रव्य ते हने घणो ॥ ३१ ॥ मल्लिनाथने देहरे गयो, जातां तेहने चोरें ग्रह्यो ॥ पालीमांहे लइ गया तेह, चार हजार सोवन मागेह ॥ ३२ ॥ भीम तणो बेटो सज्ज थयो, खोटा सोनैया लेई गयो ॥ खत्रीने कहे परखी लीउं, भीम पिताने मूकी दीउं ॥ ३३ ॥ महो टो खत्री त्यां इम कहे, सोवन पारखुं अहीं कुण लहे ॥ भीम कने परखावो एह, सत्यवादी कहेवाये तेह ॥३४॥ भीम कने परखावी जिस्ये, निरखी सो वन बोल्यो तिस्ये ॥ ए सोनैया खोटा सही, आपे पाठा एहवुं कही ॥ ३५ ॥ मलेवासी हरख्यो घणुं त्यांहि, एहवा पुरुष अछे जगमांहि ॥ संकट पडे ए साचुं कहे, सत्य काजें धन परिग्रह सहे ॥ ३६ ॥ पुत्र तणे पण जूठो कस्यो. एह विचार हिये नवि धस्यो ॥ कलिकालें ए पुरुष रतन्न, कुण पापी लहे एहनुं धन्न ॥ ३७ ॥ मूक्यो भीम गयो निज घरे, दे. :ी कीर्धी बहु परें ॥ साचे सिद्धि हुइ तस घणी, रूपन कहे हितशिक्षा तणी ॥३८॥८३८॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपन चावे सत्यनाम हुआं, मूक असत्यनो

वात, कहे मुनि जिनवरना अवदात ॥ संसार च
करे मन धरे, खांम खेली जली वेहु परें ॥ ७ ॥
श्रावक दाता धनवंत, एक सेवक राखे गुणवंत
सकल शास्त्रनी वातो करे, विण कीधे सुणतां श
वरे ॥८॥ तेणें श्रावक सेवक ते सार, श्रावक
जलोज अपार ॥ पाडोशी श्रावक सारथि, धर्म
णावे जे नर कथी ॥ ९ ॥ सेवक केरो कह्यो विच
सांजलतां मति होये सार ॥ दान करे आघेरो र
रूपन कहे हितने नवि लहे ॥ १० ॥ सर्व० ॥९५

॥ ढाल ॥ राग रामग्री ॥ महावनमांहे मृगलो॥
॥ ए देशी ॥

॥ रूपन कहे नर सांजलो, एकमित्र कीजें सा
विषम कामें काज आवे, साहानो दातार ॥ १
तेमाटें एक मित्र करवो, समान जेहनो धर्म ॥प
प्रतिष्ठा जस आप सरिखो, तेहशुं मैत्री परम ॥
गुणवृद्धि जेहनी आप सरिखी, छांने छीणी जेह
एक मित्र एमो करे जे, सुखी होये तेह ॥३॥ मा
टो मित्र जो घरे आवे,करे ते धननी हाणी ॥ आप
ने बहु मान न दीये, मान मनमांहे आणी ॥४॥ प्रीति

नवि होये तुं जाण ॥ १५ ॥ तेणें मैत्री राख सहु
म म वढो वयरी साथ ॥ किस्युं काम किहां तुं
थाये, चढे जूंका हाथ ॥ १६ ॥ पंक्ति खलने क
आगल, आप साधे काज ॥ जीज दंतनें लंठ जाए
करे आगल आज ॥ १७ ॥ जांजे करडे दंत चू
चावी करी रस देह ॥ कठिण नरने करी आगल,
द जिह्वा लेह ॥१८॥ प्रांहि कंटाला विना वलि,
होय विषमुं काम ॥ तीखा कांटा क्षेत्र राखे,आरा
घरने गाम ॥ १९ ॥ तेमाटे तुं जाणजे, वढवुं नां
कुण साथ ॥ व्यापार काजें न दीजीयें धन, मि
केरे हाथ ॥२०॥ पाडोशीशुं वढवुं पडे जिम, ति
जाण वणजह मांहि ॥ ते माटें नवि कीजीयें, व्याप
र मैत्री ज्यांहि ॥ २१ ॥ मित्रघरे धन कदा मूवे
साक्षी राखे त्यांहि ॥ कृपन्न कहे हितशीख मारे
कथा आणी मांहि ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ए७३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ शेठ धनेश्वर धननो धणी, रत्न आठ लीधां ति
हां गणी ॥ एकेक कोडी सोवननुं सही, मित्र घ
मूक्यां गहगही ॥१॥ नारी पुत्र न जाणे कोय, स
खी लखत नहिं वली कोय ॥ मूकी तिहां गयो प

मांगो तो नृपति जलो, मानो जलो न शीस ॥१॥ सखी सहोदर जंमियें, जे होय हृदये दुष्ट ॥ आपें क्युं नहिं कटीयें, अहि डस्यो अंगुष्ठ ॥२॥ गेरु वेरु सारिखा, वहेरो नहिं नरपाल ॥ गेरु पान रातां करे, वेरु करे कपाल ॥ ३ ॥ गंगा सायरमांहि वसे, मत्स्य दुर्गंधी देह॥अवगुण जास शरीरमां, फेर्यो न फीटे तेह॥४॥ दूधें सींच्या लींबडा, थाण तुम करी धुलेण॥ तोहि न छंडे कडुआ पण, जातितणे गुणेण ॥५॥

॥ परजीया रागमां ॥ दोहा ॥

॥ पहेला प्रीति करेह, करुं आतांलुं नहिं ॥ सींचाव्यांज नवेह सीना रांचे सागरं ॥१॥ नेहवुं गजुं थोर, नेहवु हेयुं दुर्जन तणुं ॥ सीतर कठिन कठोर, उपर दीसे रलियामणुं ॥ २ ॥ [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरनर जाणी सेविये अरु जिणणा पलाश ॥ जब तें मुख कालु कीयुं तब स नरी आश ॥ १ ॥ तमरे रान तमंनड़ां अगर ज काल्यां सोय ॥ नाग तणे तोलामणे वंशज ठोर गोय ॥ २ ॥ एक पा में दुर्जन जदा सज्जन न वसे चित्त॥ माया गुण तो जाणीयें जीनां वटशा गत ॥ ३ ॥ अग्नि जिम्यो

सन मानी मागे तेणें ठाय ॥ ७ ॥ मानी रानवी खाडो श्रने, साह घेरथी सड श्राव्यो पछेंं॥एक चोर कहे न होये एह. ए काळो नम कायर देह ॥ ८॥ वयनें थंभाणा जेटले, कर्ही [illegible] सीधु तेटले ॥ या पिकने घर घरमी थड मार्गो। तेणें [illegible] मही ॥ ९ ॥ [illegible] पापण नहि मकती। [illegible] विना ते नहि [illegible] ॥ पापण [illegible] नहि [illegible] कोइ श्राव्या मही ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

॥ पापण [illegible] नहि [illegible] [illegible] श्रापा ॥ [illegible] ॥

॥ ढाळ । [illegible] ॥

॥ धर्म विचार [illegible] श्रावे तेम करे ॥ धर्म विरुध [illegible] नहि [illegible] थाइ थोडामांहे [illegible] । [illegible] मन पड्यु [illegible] कहि ये मंडे कहिये धर्म मागतां अङ्ग ॥ २ ॥ [illegible] होय [illegible] श्रावे ॥ [illegible] धर्मकाम [illegible] ॥ ३ ॥ उद्यम म पूर्हीश [illegible] सणो थोडे साटे

करपी घरनो बाप ॥ खावुं पहेरवुं ने खरचवुं, ए ससराथी ते नहिं हवुं ॥ ३० ॥ संदेह जांगवा काजें वहू, कहे मुज मस्तक दुःखे बहु ॥ मांरू मांरू करे आक्रंद, ससरे मेल्यां वैदज वृंद ॥ ३१ ॥ आण्यां ओषध तिहां अनेक, करे पोटली केरा शेक ॥ शिर दुःखतुं न रहे जदा, ससरो वहूने पूछे तदा ॥३२॥ सदाये शिर दुःखे के आज, वहू बोली मुख मूर्क लाज ॥ क्यारें क्यारें शिर दुःखतुं, मोती खरडे ते रहे अतुं ॥ ३३ ॥ ससरो ताम खुशी त्यां हवा, मोर्त थाल लागा जरडवा ॥ त्यारें वहू कहे रह्युं दुःखतुं, टल्युं शल्य जे मनमां हतुं ॥ ३४ ॥ पूठयुं तेलनुं टीपुं पडयुं, ते तुम पागरखे चोपडयुं ॥ हमणां मोती जरडो बहु, ए मुज संदेह टालो सहु ॥ ३५ ॥ ससरो कहे सांजल रे वहू, वशीकरण ए धननुं सहु ॥ कामें लाख सोवन खरचियें, कुमार्गें टीपुं नवि दीजीय ॥ ३६ ॥ एणें वचनें वहू हर्ष अपार, ससरानी बुद्धि सुविचार ॥ रूपज कहे हितशिक्षा एह,होय सुबुद्धि सुणे नर जेह ॥ ३७ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४१ ॥

॥ ढाल ॥ हवे राणी पदमावती ॥ ए देशी ॥

॥ जेह सुणे नर शुज परें, वाधे बुद्धि अपार रे ॥

॥ ए ॥ ए० ॥ दश रे दिवस लगें खरचतो, लखमी वाधती जायो रे ॥ लछी कहे हुंतो इहां रही, सेवी श तुम तणा पायो रे ॥ १० ॥ ए० ॥ वणिक कहे वोल्युं दोयनुं, होशे सहि अप्रमाणो रे ॥ तेणें घर गेडीने वन गयो, पाम्यो राज सुजाणो रे ॥ ११ ॥ ॥ ए० ॥ अनुक्रमें दीक्षा ते ग्रहे, जव पांचमे मो रूयो रे ॥ तेणें कारण धन खरचियें, पात्र जोइने पोखो रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ जो धन खरचतां गयुं घटी, शोक ते न करे लगारो रे ॥ धैर्य धरे गये आवते, धर्माधर्म विचारो रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ शोक धरे पापी पुरुषडो, गयुं मुफ खरचतां धन्नो रे ॥ अथवा ठंडुं पडयुं देयतां, मूरख चिंते निश दिन्नो रे ॥१४॥ ॥ ए० ॥ पुण्यवंत इस्युं नवि चिंतवे, खरचे धन शुज गमें रे ॥ व्यवहार शुद्धे धन मेलतो, थोडुं होय वहु कामें रे ॥ १५ ॥ ए०॥ इहां दृष्टांत वे वणिकनो, नांखे कृपजनो दासो रे ॥ ए हितशिक्षाने जे सुणे, पहोंचे तेहनी आशो रे ॥ १६ ॥ ए० ॥ १०५८ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ देव जशो नर एहवे नाम, वेहु मित्र चाल्या धनने काम ॥ कनक कुंमल पडयुं वाटें एक, देखे



र ॥ पात्र जळुं कोण आणे गाम, दीजें दान तस पुण्यने काम ॥ १० ॥ कहे प्रधान एक विप्र अपार, पण न्याय ऽव्यतणोज विचार ॥ राजाने तो वली विशेष, जेहनां पाप तणो नहिं ठेक ॥ ११ ॥ देनारानुं चित्त विशुद्ध, लेनारो अति निर्मल वुद्ध ॥ दोहिला दोय मिले जगमांय, जोह मिले तो पुण्य वहु त्यांय ॥ १२ ॥ जळुं क्षेत्रने वीज सुसार, तिहां कणे अन्ननो होय अंवार ॥ क्षेत्र वीज जो होय असार, तिहां अन्न पुण्य तणो विचार ॥ १३ ॥ इस्यां वचन मंत्रीनां सुणी, खरो विचार करे पुरधणी ॥ थइ हमाल करे वहितरुं, व्यवहार शुद्ध धन मेले खरुं ॥ १४ ॥ सूर्य ग्रहणनो अवसर थयो, त्यारें राय निज राजें गयो ॥ तेड्या ब्राह्मण मल्या अनेक, अनेक दान दिये धरी विवेक ॥ १५ ॥ एक निर्लोभी हतो जेह, पाड चडावी तेड्यो तेह ॥ राजा पाय नमीने कहे, कोइ धन महारुं नवि ग्रहे ॥ १६ ॥ विप्र कहे सुण नांखुं तुज, राजपिंड नवि कल्पे मुज ॥ लोभी जेहने लेवुं रुचे, ते ब्राह्मण सहि नरगें पचे ॥ १७ ॥ मधु मिष्ट विष सरिखो पिंड, लेइ विप्र म म आतम दंड ॥ पुत्र मांस नखे ते सार,

राजपिंड ते अतिही असार ॥ १८ ॥ दश सोनार सम द्विज एक, जेहनां पापतणो नहिं छेक ॥ द्विज दश सम एक चक्री होय, दश चक्री सम आहेडी जोय ॥१९॥ दश आहेडी सम वेश्याय, दश वेश्या सम एक राजाय ॥ ते माटें सुण नृपति कहुं, राज पिंड निश्चें नवि ग्रहुं ॥ २० ॥ पगे लागीने कहे रा जान, व्यवहारशुद्धें देउं तुम दान ॥ आठ दाम पर सेवा तणा, लेतां गुण तुज मुजने घणा ॥ २१ ॥ नृप वचनें दाम लीधा जिसे, अन्य विप्र मन खीज्या तिसे ॥ तेडी तेहने सोवन देह, खाइ रह्या थोडे दिन तेह ॥ २२ ॥ आठ दाम लेई जे गयो, मूकी कोथलीमांहे रह्यो ॥ खाये खरचे देतो दान, नवि खूटे जेम नव निधान ॥२३॥ ज्ञानवन वाध्या जट दोय, नृप भंडार वधंतो जोय ॥न्यायद्रव्य नणो महि माय, रूपन कहे नृप सोम कथाय ॥ २४ ॥ १०८२॥

॥ ढाल ॥ प्रभु चित्त धरीने अवधारो
मुज वात ॥ ए देशी ॥

॥ कहुं चोभंगी दाननी जी, न्याय तणुं वित्त सार॥ दान सुपात्रें जो दिये जी, उत्तम भंग अपार ॥सोभा गी सुणो चोभंगी रे एह ॥ १ ॥ए आंकणी ॥ देव

यनुं जी, तेहथी पाप अजिमान ॥ रूपचन्द कहे रांक जी, सुणजो जसु शिर कान ॥ सो० ॥ २० ॥११०२॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुणजो सुपुरुष जस शिर कान, रांकें मेल्युं पापनिधान ॥ घणा ठेतख्या करी अन्याय, करी पाप ड्रुगतिमां जाय ॥१॥ तेणें कारण नर काह्यो जेह, अकर अन्याय करे नहिं तेह ॥ देश विरुद्ध टालतो सुजाण, नवि खंके राजानी आण ॥ २ ॥ लोकविरुद्ध नर तुं टालजे, कालविरुद्धथी अलगो थजे ॥ धर्म विरुद्ध करो म म कदा,जैनधर्म आराधो सदा ॥ ३ ॥ दान शील अने तप जाव, आराधो नर मन नें जाव ॥ धर्म तणा कह्या चार प्रकार, जाव जलो तो पुण्य प्रकार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ११०६ ॥

॥ ढाल ॥ कायाबाडी कारमी ॥ ए देशी ॥

॥ जाव जलो तो पुण्य घणुं, सुणी एक कथाय ॥ विशाला मांही वली, वीर विहरता जाय॥जाव जलो तो पुण्य घणुं ॥ ए आंकणी ॥१॥ प्रतिमा धर उजा रह्या, तप तिहां चउमासी ॥ जीरण शेठ निमंत्रणुं, करी जाये प्रकाशी ॥ जा० ॥२॥ अति घणी जावे जावना, धन्य हुं जग मांही ॥ चार मासनुं पारणुं,





गति पामे सती ॥ १ ॥ रोग निवारे मुनिवर तणो, तेहनो महिमा जाण्यो घणो ॥ जीवानंद परें तुं जोय, गोत्र तीर्थंकर बांधे सोय ॥ २ ॥ वसति दान नुं पुण्य विशाल, तर्यो अवंती जे सुकुमाल ॥ बंकचूल जयंती सार, कोश्या पामी भवनो पार ॥ ३ ॥ इम्यां दान भावें करी जेह, आ भव परभव सुखीया तेह ॥ भावें शील धरे सुकमाल, होये नीर टली अग्नि झाल ॥ ४ ॥ शीलें नारद सिद्धा सही, जंबूनी कीर्ति गहगही ॥ थूलिभद्र मुनि जीते काम, चोराशी चोवीशी नाम ॥५॥ शेठ सुदर्शन सुधो कह्यो, शिवकुमार नर शील रह्यो ॥ एणी परें पाले भावे शील, वंकचूल पर पामे लील ॥ ६ ॥ भावें तप त पतां सुख थाय, पांडव परमुख मुक्त जाय ॥ काकंदी नगरीनो धणी, तप तपतो निश्चल एकमनी ॥ ७ ॥ सर्वार्थ सिद्धि पाम्यो सार, वली सुख पाम्यो सनत कुमार ॥ नंदीषेण तप उदिय करी, सोवनट्टि करे घर खरी ॥ ८ ॥ अर्जुनमाली ने दृढप्रहार, तपें करी ने पाम्या पार ॥ भाव सहित जे तप आ दरे, मुक्ति तणे मारग संचरे ॥ ९ ॥ भावें भावना भावी जेह, केवलज्ञान लहे नर तेह ॥ भरत इं

वीर संयोगिक श्रेणिक नरो, नहिं काग मंसपच्चक्खा ण रे ॥स०॥३॥ एह अविरतिज देवता, जव जोगमां जाय रे ॥ जीव अभ्यास जेहवो करे, तेहवो आगलें थाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ जेणें व्रत पालियां निर्मलां, आगलें व्रत संयोग रे ॥ व्रत विना तुज नवि गले, विषम कर्मना रोग रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तेणें व्रतजंग न कीजीयें, कदी जोहि खंमाय रे ॥ तेहिज आगल व्रत पालियें, जेम कर्म धोवाय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ नियमी वस्तु अण सांजरे, धरी जो मुखमांहे रे ॥ तेह पाठी नर नाखतो, व्रतजंग नहिं त्यांहि रे ॥ स० ॥ ७ ॥ जोहि खाधा पठी सांजरे. बीजे दिवसें पालेह रे ॥ मिठा डुक्कड देइ करी, आराधक होय तेह रे ॥ स० ॥ ८ ॥ वस्तु अचित्त संशय पडी. नर वावरे जेह रे ॥ तेहने जंग हुउ सही, व्रतनो वली तेह रे ॥ स० ॥ ए ॥ घणोज मांदो ने जूतें दम्यो, थयो परवश जंन रे ॥ सर्प डसे अजिग्रहें वली, पाले तो गुणवंन रे ॥स०॥१०॥ नवि पले तोहि नियमज तणो, जंग ते नवि होय रे ॥ चार आगार कह्यां सही, सकल नियममां जोय रे ॥ स० ॥ ११ ॥ सहेजें वातनो जंग करे, विराधक कह्यो तेह रे ॥ तेणें निज गुरु हेलीयो, डुःख पामतो देह

तोले ॥गुण०॥२॥ मर्द्दन करे कर साही उगाडे, वचन कह्युं ते चोमि न पाडे ॥ वचन प्रमाण करेवा काम, प्रमाण देशोटो कीधो रे राम ॥ गुण० ॥ ३ ॥ सुणी अ वचन मन आनंद धरतो, चित्त न बेसे तोहीपण करतो ॥ सखर सेवा करे गुरुने पितानी, रहस्य प्रकाशे वात जे छानी ॥ गुण० ॥ ४ ॥ थोडुं जाण्यो करे वृद्धनी सेवा, ते होय बुद्धि लोकोने देवा ॥ जेह वुं लहे गरढो कोइ एको, तरुण कोडिमांही नहिंज विवेको ॥ गुण० ॥ ५ ॥ उक्त पूछ्युं नृप पाटु मारे, कवण दंड देवो तस त्यारें ॥ तरुण कहे मारेवो तेहने, नृप निर्भ्रंछे मनमांहि एहने ॥ गुण० ॥ ६ ॥ गरढो कहे तस पूजा कीजें, वस्त्र पहेरावीने नूपण दीजें ॥ नरपति हरख्यो तेणी वारो, पूजी वाल पहेराव्यो रे हारो ॥ गुण० ॥ ७ ॥ तेणें कारणें नर काह्यो जेहो, वृद्धवचन माने सहु तेहो ॥ एक हंस सुत एकशो आठो, चुनि करवाने लीये जव वाटो ॥ गुण० ॥ ८ ॥ सार्थे बाप गमे नहिं गरढो, तरुणा पूर्छे श्यो ए जरढो, वात कहे सुणो पुत्र गमारो ॥ कवि एक गरढो करे तुम सारो गुण० ॥ ९ ॥ एक दिन सघला पाशमांहे [illegible] हंसा

याय, शेठ धर्मगुरु मात पिताय ॥ ५ ॥ तेल सत सहस पाकने ग्रही, करे अभ्यंगन पोतें सही ॥ सुगंध पीठी अंगें करी, तेल उतारे सुत वस्त्र धरी॥६॥ सुगंधनीरें धूए शरीर, लूहे लेइ निर्मल चीर ॥ पहे रावे शोले शिणगार, विचरे जांवे रूपन विचार॥७॥

॥ छप्पय ॥

॥ कुंठ मुंत्र सम राय, मर्जन कुंडल कानें ॥ वस्त्र तिलक वाणही, मुकुट मुख शोभे पानं ॥ खड्ग मुद्रि का हाथ, चंदन अंगें लगावे ॥ कमरें पटुंबर सार, तु रिका त्यांहि बनावे ॥ विद्या विनीत शीखें नला, शोल शणगार शोहे नरा ॥ कवि रूपन गणी पंरं उचरे, पु ण्य पुरुष पामे खरा ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १२०४ ॥

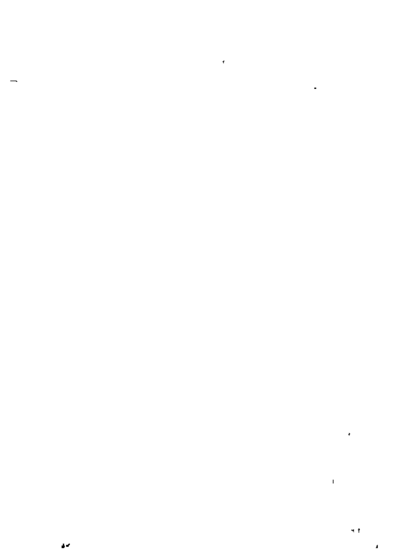
॥ ढाल चोपाईनी देशी ॥

॥ नला पुत्र होये जग जेह, गणी पंरं जगति करे छे तेह ॥ पूर्वी वान करे नित्य नमे, तृण्यो तात पोतें नवि जमे ॥ १ ॥ रूपा तणी मूके थ्या गणी, भोजननी मांके मांकणी ॥ मूके कनक तणो त्यां थाल, अति उज्ज्वलने अनिहि विशाल ॥ २ ॥ मन गमता दीसे त्यां पाक, सुख पामे जिह्वा ने नाक ॥ षड्‌ पकाय न लाभे पार, सिंघ केसरिया मोद

बहु सनमनी पाम्यो ते तिस्ये ॥ १२ ॥ सरव शेठ सा
मोकले, मांक्यो वणज पोगे एकले ॥ धन कमाई
आवयो घरे, करे विनय शालानो बहु परे ॥१३॥ मा
करी नदाता सेह, शीत नगरं रह्यो गड मेह ॥ का
शेठ ने नांम्यां चण अइया शाग जमता मणुं ॥१४

॥ दोहा ॥

॥ जिन मथवा मरवा नहि म करा पुरष गुण
न ॥ ब्रह्मदत्त चक्री विख्या ामना न मिटे धान
॥ १ ॥ दाधी नगरी डारका नाना यानव दाग ॥ म
ह्यां विक्रम वन मुन मान न करस्या कोय ॥
॥ २ ॥ समय कर्ण ममव न नमाय नहु नाग
ज ॥ मोदन गमी अनुन नब नमा मद्द गुज
॥ ३ ॥ उत्तम मनि मल्ल शास हुत ज्ञान वरम
दन्नाय ॥ ज्ञान नेत्र मानज वसी. न धन नाथां शाग
॥ ४ ॥ सायर पुत्री विक्रम निग नर गर्भिया आइ॥
कर्ही हीर घर परं महिया नीच गवाय ॥ ५ ॥
करी गड शालिग मणी विषड़ करं विमाय ॥ कृत्रे
घर वेनी जु रहु श्रन्नदेन मुक मार ॥ ६ ॥ नेह केरा
नम्र कयम नर, निज थानक आवत ॥ गुरुष निह
मर्वदं महि, मदते मान शहेल ॥ ७ ॥ इनु विमा



णं थयो ॥ जिन कहे तो ठंगिंगण थाय, जैन धर्म पमाडे ताय ॥ ८ ॥ वाणोतर कहे शाहने फरी, रिद्धि पाम्यो जिनधर्में करी ॥ तुमें आराधो जिननो धर्म, थोडे दिवसें फले तुम कर्म ॥ ए ॥ यति पासें ते तेडी गयो, सुणे सूत्र तिहां गहगह्यो ॥ पडिक्कमणुं सामायिक करे, जिन पूजी जिनने मन धरे ॥ १० ॥ वाणोतर करनो व्यापार, वाधे वादलो शेठनो सार ॥ आवे लाज आपे शेठने, थोडे दिवसें वाध्यो ते धनें ॥ ११ ॥ आवी आमना जिन उपरें, खरच्युं धन तेणें बहु परें ॥ अंतें दीक्षा लीधी सार, सद्गति पाम्यो तेणी वार ॥ १२ ॥ पूछे गौतम जिनवर तणे, ठंगिंगण हूउं एम तणे ॥ वीर कहे ठं गिंगण थयो, बीजो भेद कवि रूपनें कह्यो ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ कदलीवननो रे सूडलो ॥ ए देशी ॥

॥ गौतम स्वामी रे पूछता, सांभलो जिनवर राय के ॥ जेणें जिनधर्म पमाडियो, ठंगिंगण किम तस थाय के ॥ गौतम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ यति यतिनी श्रावक श्राविका, सुणि तम धर्मकथाय के ॥ पामी धर्म थयो देवता, करे हवे एटला उपाय के ॥ गौ० ॥ २ ॥ धर्माचारय आपणो, पीड्यो रोगें

॥ गौ० ॥ ११ ॥ पूछ्युं नामज तेहनुं, पृथ्वीकायि
ो कुमार के॥ चूपण लोन्नें रे मारियो,चालियो तेणी
ार के ॥ गौ० ॥ १२ ॥ आगल अपकायियो म
ो, मारी लीधां आभरण के ॥ पछें तेउकायियो
ारियो, वायुकायियाने मरण के ॥ गौ० ॥ १३ ॥
नस्पति त्रसकायियो, मास्या कुमार ते दोय के ॥
े सुर संघ विकूर्वतो, वंदन आवे सहु कोय के
गौ०॥ १४ ॥ वांदी वलगा रे ठोकरा, त्रोडी फोली
ते ताम के ॥ पूछे गुरु किस्यां चूपणां, मुनि कहे
एहनुं काम के ॥ गौ० ॥ १५ ॥ एम कही मुनिवर
चालियो,दीठुं नाटक ताम के॥ जोतां खट मास वही
गया, न कस्युं बीजुं कांइ काम के ॥ गौ० ॥ १६ ॥
आगल जातां रे आवियो, शिष्य करी मूलगुं रूप
के॥ वांदी देवता एम कहे, आ शुं तुमह सरूप के
॥गौ० ॥ १७ ॥गुरु कहे तुं शिष्य नावीयो, पडिउं हुं
अपार के ॥ शिष्य कहे नाटक जोयतां, तुम होय
केटली वार के ॥ गौ० ॥ १८ ॥ गुरु कहे थोडीशी
वेला हुइ, चेलो कहे षट मास के ॥ नाटक मोलो
नवि आवियो,तुमो मन रालोह गाम के ॥गौ०॥१९॥



खोयुं राज लंका तणुं, खोयां सघलां शीश ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ ते धन्या ते साधुज नाम. तेहने नित्य कीजें परणाम ॥ जेह अकारय विरमी रह्या. अखंम व्रत पालंता कह्या ॥ १ ॥ थूलिजद्र जिम साचो यति, अकार्य काम न कीधुं रति ॥ वेश्याघर चोमासुं रही, व्रत अखंम पाले गहगही ॥ २ ॥ वडुं व्रत जे पर्वत प्राय, उपाडवा तत्पर ऋषिराय ॥ इस्यो साधु युवती संग जोय, संयम भ्रष्ट बहु परें होय ॥ ३ ॥ मुनि तपियो मस्तक लोचतो, एकामण वांकल पहेरे तो ॥ पण ते अब्रह्म जाचे पछें, ब्रह्मा होय नो मुक नवि रुचे ॥४॥ जणुं गणुं तेहनुं परिमाण. जे चेल्या ते पंमित जाण ॥ कष्टें पड्या प्रारथीया यति, जेह अकार्य न करे रति ॥ ५ ॥ सुदरिसण शेठ तणी परें रहे, पाडे कष्ट अजया तस कहे ॥ नवि बोल्यो नवि खंम्युं शील, आ जवें परजवें पाम्या लील ॥६॥

॥ दोहा ॥

॥ नवयौवन स्त्री देखी करी, नयन रहे जस ठाम ॥ रूपन कहे जन जइ करी, तस चरणे शिर नाम ॥ १ ॥ काम जोग उपजोग बहु, पाम्या अनंती



क आलोए सोय के ॥ गौतम पूछे रे वीरजी, शिष्य उंशिंगण होय के ॥ गौ० ॥ ५ ॥ शिष्य उंशिंगण ए थयो, जांखे वीर जिणंद के ॥ रुषज कहे हितशी खडी, सुणजो श्रावकवृंद के ॥ गौ० ॥६॥ १२०४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ वीर कहे श्रावक आदरो, मात पितानी जक्ति ज करो ॥ धर्म पमाडो धर्मी धूरें, आर्यरक्षित सूरिनी परें ॥ १ ॥ दशपुर नगर अनोपम कहे, पुरोहित सोमदेव त्यां रहे ॥ सोमरुद्रा नारी जेहने, आरियरक्षित सुत तेहने ॥ २ ॥ चउद विद्या जणी आव्यो जिस्ये, खूशी माय न हुई तिस्यें ॥ पूछे पुत्र नहिं हर्ष अपार, माय कहे सुण पुत्र सुसार ॥ ३ ॥ पूरव चउद जणो तो जल्ल, पातक रूपियां काढो शल्ल ॥ पुत्र कहे ते पामुं क्यांहीं, माय कहे मुक मामो ज्यांहिं ॥ ४ ॥ तोसलीपुत्र जणी ते चव्यो, साढी नव शेलडी लइ मव्यो ॥ विप्रकुमरने दिये तसु गाय, कुमर मोकले जिहां निज माय ॥ ५ ॥ देखी शेलडी कस्यो विचार, पूर्व साडा नव जणे कुमार ॥ कुमर गयो तव गुरुनी संग, उपाशरामां पेठो रंग॥६॥ ढढ श्राव कने पूठें गयो, शीखी वांदे त्यां गह गह्यो ॥ सघली विधि

श्रावक परें करी, ओळखी गुरु बोलावे फरी ॥ ७ ॥
कुमर कहे चउद पूरव जेह,मया करीने जणावो तेह॥
तोसलीपुत्र कहे सुणो कुमार, संयमविण नहिं पूरव
सार ॥ ८ ॥ लीधी दीक्षा ऊंम्युं सहु, श्रुतसिद्धांत
जणाव्यो बहु ॥ गुरु कहे पूरवनो खप करो, वयर
स्वामी चरणे अनुसरो ॥ ९ ॥ गुरुवचनें त्यांहांथी
चालियो, उज्जेणीमांहे आवियो ॥ भद्रगुप्त आचा
रय जिस्ये, आर्यरक्षित निजामे तिस्ये ॥१०॥ शीख
दीये आचारिय सही, वयरस्वामीथी अलगो रही ॥
जणजे पूरव तुं गहगही, सुणी वचन चाल्यो ते वही
॥ ११ ॥ वयरस्वामी अवंतीमांहि, वादी जणवा
लाग्यो त्यांहिं ॥ पूर्व साडा नव जणियो जिस्ये,
आर्यरक्षित मुनि थाको तिस्ये ॥१२ ॥ फल्गुरक्षित
जाई ठे जेह, आव्यो शोधवा वेगें तेह ॥ प्रतिबोधी
तस दीक्षा देह. विहुं दसपुर नगरें आवेह ॥ १३॥
नृपति बहु सामइयुं करे,नगरमांहि मुनिवर संचरे॥
कुटुंब सकल वांदे गहगही. प्रतिबोधी दीचे संयम
सही ॥ १४ ॥ पिता न बुझे तेणें ठाम, धोती विण
न नमुं परगाम ॥ जनोइ ठत्र अनेज उपान, हाथ
कमंडल ते शुजवान ॥ १५ ॥ अतिशयवंत गुरु

रती ॥ पूछे गोतम वीरने वली,तव वखतुं भांखे केवली ॥ १० ॥ ए उंशिंगण तातने थयो, आर्यरक्षित वांदेवो कह्यो ॥ रुपचंदास कहे हितशिक्षाय, उत्तम मानो मात पिताय ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मात पिताने मानियें, जिम जग कुरमा पूत। गृहस्थपणे जस ऊपन्युं, केवलज्ञान अद्भूत ॥ १ ॥ गृहस्थ तणे वेशें रह्यो, लेतो निरवद्य आहार ॥ मात पिता प्रतिबोधियां, दीधो संयमभार ॥ २ ॥ राजगृहीनो राजीयो, महेंद्रसिंह नरींद॥पटराणी कुरुमा तिस्यें, करतां बेहु आनंद ॥ ३ ॥ कुरुमा पुत्र सुत तेहनो, धुरथी नहिं उन्मत्त ॥ यौवन वय पाम्यो जदा, तव ते विषय विरत्त ॥ ४ ॥ एक दिन साधु भणतां सुणी, देतो प्रेमें कान ॥ जातिसमरण पामियो, कीधुं हैडे ज्ञान ॥ ५ ॥ देवतणो भव देखतो, मानव हुउं हुं आंहीं ॥ गर्भतणां दुःख दोहिलां, चेत्यो चित्तशुं त्यांहि ॥ ६ ॥ असार स्वरूप संसारनुं, देखे तिहां कुमार ॥ शुक्ल ध्यान ध्यातो तिहां, विरुउं काम विकार ॥ ७ ॥ ध्यानरूप असि करी, कर्म इंधण बालंत॥केवल ज्ञानें झलहल्यो, जाणे भाव अनंत ॥ ८॥

राम ॥ ५ ॥ चोथो चूको हनुमंत वीर, लंका वन पहोतो गंभीर ॥ सिताशुं जेणें कीधी वात, तेह नाव्यो ते चूक विख्यात ॥ ६ ॥ अवधिज्ञान हुवुं आणंद, नवि माने गौतम गुणचंद ॥ वीरतणें पूछे तो सही, मिछादुक्कड देनो जई ॥ ७ ॥ चूको महिपति शंख नरनाथ, कलावतीना काप्या हाथ ॥ अमरकुमारें मूकी नार, वणिकपुत्र चूको तेणें वार ॥८॥ विप्रवचनें चूक्यो भूपाल, नंदें कुलव्यो मंत्री सकडाल ॥ रामचंद्र नृप चूको सहीज, सीता पासें करावी धीज ॥ ९ ॥ दमयंती नल मूकी रान, त्यां नल चूक्यो निश्चय मान ॥ विमल वगोव्यो तिहां कणे कहो, अश्व चढी जिन आगल रह्यो ॥ १० ॥ अनेक एम नर चूका सही, धर्मउपदेश देवो गहगही ॥ समजे ते माहापण आदरे, मान पिनानी नकि करे॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कारण नर सांभलो, नकि करो निजतात ॥ तेहथकी अधिकी कही, जेह पोतानी मात ॥ १ ॥ सेव करे उवद्यायनी, नकि करे दश वीस ॥ एकदा आचारज तणी, पुरुष सरीखुं थाय ॥ २ ॥ आचारियने पूजतो, कोडक पुरुष सोधार ॥ मात ना

तस पात ॥ १३ ॥ न वढे बांधवशुं कदा, राखे वड नी लाज ॥ भ्रात अठाणुं नरतना, मूके पृथ्वीराज ॥ १४ ॥ भ्रातें तेड्या बल करी, मिली रुपच कहे जात ॥ राज दीयो कीजें वडा, जांग्यो स्वामीतात ॥ १५ ॥ अठाणुं गाथा तणुं, कह्युं अध्ययनज त्यां हिं ॥ श्री सूयगडांग धुरें सही, जुर्ज सिद्धांतज मांही ॥ १६ ॥ पुत्र अठाणुं वारिया, म वढो बंधव साथ॥ वढो कषायज चारशुं, नावो जमने हाथ ॥ १७ ॥ बंधव अठाणुं बूजिया, मूकें लोभ कषाय ॥ वढवा नागा वातशुं, लीधी तेणें दीक्षाय ॥ १८ ॥ सुख मां सांजरे नारया, दुःखमां सांजरे माय ॥ बांधव त्यारें सांभरे, मस्तकें वागे घाय ॥ १९ ॥ भूख्यां नोजन समरियें, तरश्यां समरे नीर॥ रणमांही बांधव समरियें, माडीजायो वीर ॥ २० ॥ रयणी थोडी रण घणां, पूतें चड्यां केकाण ॥ बांधव होय नो मां भियें, नहिं कर जरुवी पराण ॥ २१ ॥ वडुर्ज काको माउलो, नाणेजो नतरीज ॥ उचित एहनुं साचवे, जगति जलेरी कीज ॥ २२ ॥ उचित नारीनुं साच वे, ते सुखीयो संसार ॥ रुषन कहे हित शीखडी, को म म डुहवो नार ॥ २३ ॥ आणंद कहे नर

आदरे ॥ पैशाचक वाणिगनी कथा, जांखुं सांभ
सुणी में यथा ॥ ७ ॥ पैशाचक वाणिग कहेवाय, ए
कदा झाड तलें थंभिल जाय ॥ एक देव रहे तेणें
झाड, डुगंधी डुःख लागुं हाड ॥ ८ ॥ देव उद्वेग
करे उपाय, पण वाणिगने छ्योो न जाय ॥ अणु
जाणह उस्सग्गो कही, नित्यें थंभिल जाये सही॥९॥
सुर चिंते एणें लोपी लाज, उपाय करीने मारुं आज
॥ थंभिल बेठो वाणिग जिस्ये, मागो सुर तूठो कहे
तिस्ये ॥ १० ॥ जे तुं काम कहे ने करुं, खूटे काम
तो प्राण तुझ हरुं ॥ गले पाश देवें आणियो, छेतर्यो
नवि जाये वाणियो ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खेनो खमे देनो खमे, उपर चडावे पाट ॥ वली
विषधरने मेवीयें, पण नवि मेविये किराट ॥ १ ॥
आगें कुंदेग छेनग, खुंदी कुंचडो दोय ॥ सेठ हवी
यार तस्कर हण्या, वणिग ममो नहिं कोय ॥ २ ॥
वाणिक घर तस्कर गयो, गांठ्यो कोगल नाम॥ नाह
क धोयो यापडो, सेठ न शक्यो मग दाम ॥३॥ तज्ञा
नृप भुयंगमा, ए मुख दोहला हुंत ॥ येरी यीनी वा
णियो, पूठें दाह दियंत ॥४॥ सर्वगाथा ॥ १३८० ॥

तो ॥ पुण्य पाधरुं वणिक श्रपार, न शक्यो सुर छे तरी लगार ॥ ७ ॥ कामथकी परवारे नहिं, चूंको करी शके ते कहिं ॥ साधु जलो एम वखगो काम, नवरो मन न रहे तस ठाम ॥ ८ ॥ तिम नवरी थली न रहे नार, काम विलुळी मन तस ठार ॥ वाणिग कथा कही में सही, श्रवर कथा सुणजो गह गही ॥९॥ श्रीपुर नगरें जिनदत्त शाय, वडो पुत्र पर देशें जाय ॥ श्रीमती नामें तेहने नार, यौवनवंती तेह विचार ॥ १० ॥ नर चाख्यां दिन जाजा होय, तव नारी कामातुर सोय॥गरढी स्त्रीने कहे तेणि वार, कोइ एक पुरुषने श्राणो बाहार ॥ ११ ॥ १३९२ ॥

॥ समस्या दोहा ॥

॥ गजरिपु तस रिपु तास रिपु, रिपु रिपु वृक्ष मिलाय ॥ हरिशय्या पुत्री तणो, सुत पीडे मुज माय ॥१॥ श्रर्थः-काम पीडे छे ते ॥ सर्वगाथा ॥ १४९३ ॥

॥ छप्पय ॥

॥ सत्यजामा घरे कहान, श्राव्यो पश्चीम रातें ॥ पूछे नारी तुं कोण, हुं माधव निज जातें ॥ माधव तो वनमांही, चक्री चक्री तो कुंजारह ॥ धरणी धर तो शेष, श्रहिरिपु गरुड अपारह ॥ हरि कहेतां

मशाणे, भूमि सूवे नर घेलो ॥ मूरख मर्म न जाणे कांइ, जोगकामें ते पहेलो ॥ हो देवा० ॥ ६ ॥ वस्त्र हीण हिंडे नर नागो, हाथ पाय परिवारो ॥ वहेरो बोबड श्रांधो चीबो, कीते नहिंज विकारो ॥ हो देवा० ॥७॥ जरादंड वागो कटिमांहि, शिर पलियां सूगालो ॥ विषय तणी हजी वान न मूके, जो हुर्उ विण दंतालो ॥ हो देवा० ॥८॥ सर्वगाथा ॥१४०३॥

॥ दोहा ॥

॥ विषयविह्वल नारी हुई,कहे कोइ नरने श्राण ॥ नवरी मन दह दिशि फरे, हाय गुण केरी हाण ॥१॥

॥ समस्या ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ कन्या काय कुमारी घणी, कृपण लछी वाघे श्या भणी ॥ चाडी तांत कहो केम करे, त्रण उत्तर द्यो एक श्रक्करें ॥ १ ॥ श्रर्थ ॥ नवरी ॥ नवरी नारी नहिं घर कंत, धन यौवन नें रूप अत्यंत ॥ महोटुं मंदिर सार सझाय, कहे कोशीने काम क थाय ॥२॥ तेणें नारें ससराने कह्युं, वहूनुं मन नवि जाये रह्युं ॥ नवरी न रही यौवनवती, सोय शील केम राखे सती ॥ ३ ॥ ससरे बुद्धि विचारी त्यांय, मेल्यां माणस निज घरमांय ॥ सरव काम करो

. वे वहु दान देवे, ठंदें न चाले कांय रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पांचे वोलें प्रेम नासे, घणे काल मिलंत रे ॥ अत्यंत जाजुं मले ज्यारें, तेहनी प्रीति पलंत रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ वात ठानी जेह राखे, करे सवलुं मान रे ॥ प्रेम नासे तदा तेहनो, दीये वली अपमान रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ पांचे वोले पुरुष मूके, प्रियाशुं प्रेम वधार रे ॥ धर्म कर्म जिम सुखें चाले, चढे मुनिवर वार रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कोएक वेला अतिहि चूंरुं, वोली जो घर नार रे ॥ झाह्यो जाणी रहे मनमां,कहे नाहिं हारठार रे ॥ज० ॥६॥ वांक होय तो विधें वारे, रूठी मनावे नारी रे ॥ हाणि वृद्धि धनगुपत वातो, वयर वात निवारी रे ॥ज० ॥ ७ ॥ थोडे वांके शोक नाणे,मूरख म धरो रीश रे ॥ स्त्री उपर स्त्री वरे वीजी, डुःख लहे निशि दिस रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ वे नारीनो कंत क्यारें, चूख्यो तरश्यो जाय रे ॥ क्यारे कंत प गधोए न मिले, वैर वाधे तिण ठाय रे ॥ ज० ॥९॥ देशांतर जाखसी रूडी, नरगें जावुं सार रे ॥ पण कही वे नारी चूंमी, डुःख लहेज अपार रे ॥ज०॥ ॥ १० ॥ कदाचित् वे नारी परणो, धरे सरीखो राग रे ॥ नारी वारो नर न लोपे, जोजन सरिखो

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुपरें बुद्धि वाधे नर शिरें, महिला मंत्रणुं जे नवि करे ॥ नरनुं काम करे ज्यां नार, तेहनुं घर विणसे संसार ॥ १ ॥ धारानगर जिहां अन्याय त्याज्य, राजा जोज करे त्यां राज्य ॥ तिहां एक सात जूमि आवास, व्यंतरदेव अधिष्ठें तास ॥ २ ॥ रहेवा आवे मंदिर कोय, व्यंतर देवता पूठे सोय ॥ चार बोलनो करे जवाप, ते इण मंदिर रहेशे आप ॥ ३ ॥ शारद कुटुंब आव्युं तिहां सही, राजाने पूठ्युं गह गही ॥ कहो नो आवियें नगरीमांहिं, दूध कचोलुं पाठव्युं त्यांहिं ॥ ४ ॥ दूध कचोलुं जिम ए जखुं, तेम नगरी माणस नरवखुं ॥ नगर कचोलामांहे नहिं ठाम, किहां आवी लेस्यो विशराम ॥५॥ शारद कुटुंब त्यां बोले इस्युं, जोज सरिखो नृके किस्युं॥ सहु मानव सरिखा नवि होय, अंतर कीधा कर्म जोय ॥ ६ ॥ पथर पथरमांहि अंतर कस्यो, एक रहे केसर पुष्पें जस्यो ॥ एक उपर मूके सहु पाप, वागे ठेश नो चढे कषाय ॥ ७ ॥ करी करी मांहे अंतर कियो, एक गर्दजनी परें लादियो ॥ एकने सोवन घूघरा जूल, करे आरति पूजे फूल ॥८॥ आन

श्वान मांही श्रंतर कियो, नवि जाये पूरवनो दियो ॥ दत्तवती वेसे पालखी, एक तो श्वान होये अति डुःखी ॥ ए ॥ पंखी जातिमांहे श्रंतर वडो, इंटयें उ फाडे जइ कागडो ॥ कोकिल पूजा पामे बहु, वचन तणो ते महिमा सहु ॥ १० ॥ मानव मानवमांहि श्रंतर कस्वो, रत्न चूपणें दीसे चस्वो ॥ एकने तरुश्रा तणी मुद्रिका, श्रलगा दीसे नर ते थका ॥ ११ ॥ एक पहेरे रेशमी धोतियुं, एकने नहिं फाटुं पोतियुं ॥ एकने तेडे सत्ता मकार, एक ठेलाणो जाये बहार ॥ १२ ॥ एक श्रवते गामेंज समाय, एक ठते गामें फरी जाय ॥ सकल जीवमांही इम श्रांतरुं, राजा जोजने कहेजे खरुं ॥ १३ ॥ दूध कचोलुं तें मोकल्युं, ते जाये ठे सहि ऊगल्युं ॥ पण खंम एमां हींज समाय, नवि ऊंचुं थइ दूध न खाय ॥ १४ ॥ इस्युं कहीने पंमिन त्यांहिं, मूके पतासां दूधज मांहिं ॥ सोय समाणां दीगं जिस्यें, श्राण्युं कचोलुं जोज कने तिस्यें ॥ १५ ॥ पूठी जोज दीयें श्रादेश, नगरमांहिं कीधो परवेश ॥ जाणो गाम तिहां उत रो, मुफ नगरी तुमें रहेवुं करो ॥ १६ ॥ शारद कुडुं च नगरमांहिं जाय, कुमरी एक मली तस गाय ॥

कहे वेहेनी कोनी दीकरी, ते कन्या बोली त्यां फरी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ " पर्वताग्रे रथोयाति, भूमौ तिष्ठति सारथिः ॥ चलति वायुवेगेन, तस्याहं कुलबालिका" ॥१८॥ परजापतिनी ए दीकरी, पण विद्यायें पूरण भरी ॥ हरखी पंक्ति आघा जाय, कुमरी एक मेला पक थाय ॥ १९ ॥ " श्लोक ॥ अजीवा यत्र जीवंति, निःश्वसंति मृताअपि ॥ कुटुंबकलहो यत्र, तस्याहं कुलबालिका ॥ २० ॥ " ए लुहार तणी बालिका, मधुर बोल बोले मुखचका ॥ नोज नगर विबुधें परखयुं, हरखी आगल जावुं कख्युं ॥ २१ ॥ कुमरी एक मिली फरी, बोलनी जननां मन हरी॥ श्लोक एक कह्यो तिहां रही, पुरुष सौ सुण्यो गहगही ॥२२॥ "श्लोक ॥ शिरोहीना नरा यत्र, द्विबाहु करवर्जिताः ॥ जीवंतं नरं नक्षंति, तस्याहं कुलबालिका ॥२३॥ " जाणी दरजीनी दीकरी, आगल पुरुष गया परवरी ॥ कुमरी एक मली जेटले, बोलावी वेगें तेटले ॥२४॥ " श्लोक ॥ जलमध्ये दीयते दानं, प्रतिमाही न जीवति ॥ दाताग्रे नरकं यांति, तस्याहं कुलबालिका ॥ २५ ॥ " जाणी माछीनी ते धीय, स मली पंक्ति चाल्या तेय ॥ आव्या व्यंतर यासे घेर,

पूरे जननी आश ॥ २ ॥ कहोलें म चढ एरंड तुं, देखी गिरुआं पत्र ॥ फलह धडक्का जे खमे, ते तो तरुवर अन्न ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १४६७ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ एकलो पेट जरे लख तणां, तेणें पुरुषें शोजे आंगणां ॥ इस्यो एक जलो सहु गाय, सुणी वचन हरख्यो जक्खराय ॥ १ ॥ त्रीजो बोल कह्यो त्यां सार, पूछो जना तुमें कहो विचार ॥ नाहाना पुरुषशुं प रिचय थाय, गांमी पूछने नारी जाय ॥ २ ॥ तेणें पूछें परणवुं नहिं, सुणी जक्ख हरख्यो मन तहिं ॥ चोथो बोल कहो जस घरे, नारी प्रवर्त्ते पुरुषनी परें ॥ ३ ॥ शारद कडुंब बोले तस गार, तेहलुं घर विणसे निरधार ॥ गुह्य कहे जो स्त्रीने जई, तेह पु रुष घर विणसे सही ॥ ४ ॥ जिम कुंरुस पुर नगर मकार, मंथर कोलिक रहे तेणे ठार ॥ ताणा पांज णी ते नर करे, एक दिन ते वनमां संचरे ॥ ५ ॥ १४७५ काज शीशम तरु चढे, व्यंनर वारे अति आ रडे ॥ काप म तरुवर आंहिं मुक वास, उत्तर पाठो पूरुं आश ॥ ६ ॥ नवि माने जाडे दिये घाय, कठ ण तिणें सहु लागे पाय ॥ गज सुकमाल हुई जो

मस्तक आप्यां हाथ, थयुं कुरूप नगरीमांहिं जात ॥ ॥ ६ ॥ चूत जिस्यो आवतो जाणियो, फर्या लोक वूंचे आहण्यो ॥ मार्यो इंटे पाड्यो मही, मंथल ज मघर पहोतो सही ॥ ७ ॥ शास्त्रमांहे कयुं छे कथी, जेहने पोतें बुद्धि नथी ॥ कहेण न माने मित्र ज तणुं, स्त्रीने गुह्य पूछे आपणुं ॥ ८ ॥ ते खप पामे वहेलो घरे, मंथल कोलिकनी ते परें ॥ प्रायें दीसे एहवुं वली, निश्चें नवि जांखे केवली ॥९॥ उत्तम स्त्रीने पूछया वती, गुण थातो पण दीसे अति ॥ वस्तुपालने गुण हुर्ज तिस्यं, अनुपम देवी पूछे जिस्यें ॥१०॥ कुलवंतीने व्रत आकरां, बोले वचन सदा ए खरां ॥ राग होये जिनधर्मने विषे, नरने मिथ्यात्व करतो रखे ॥ ११ ॥ कुलवंती एहवी जे नार, कदा चित् गुह्य कहे तिण ठार ॥ उचित तेहनुं सहि आदरे, रोग होय तो औषध करे ॥ १२ ॥ धर्म करावे आगल रही, तपनुं उजमणुं ते सही ॥ दान देय पूजा जागरा, उत्साह वधारे ते नर खरा ॥ १३ ॥ आपे द्रव्य न करे अंतराय, थोडूं पुण्य ते नरने थाय ॥ करे करावे अनुमोदे ज्यांहिं, वीरें पुण्य कयुं छे त्यांहिं ॥ १४ ॥ रूपज कहे नर उत्तम जेह, स्त्रीने

पुण्य करावे तेह ॥ हितशिक्षा मन धरतो हवे, नारी उचित नर ते साचवे ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ १४ए२ ॥
॥ ढाल ॥ ते गिरुश्रा जाइ ते गिरुश्रा ॥ ए देशी ॥
॥ उचित पुत्रतणुं साचवतो, ते नर श्रागल फावे रे ॥ पांच वरस ते लाले पाले, दश वरसें जणावे रे ॥ ए हितशिक्षा ए हितशिक्षा, सुणतां होय चतुराई रे ॥ न सुणे ईर्ष्या मान धरीने, न गई तस मूर्खाई रे ॥ १ ॥ ए हित० ॥ ए श्रांकणी ॥ शोल वरसनो ज्यारें थाये, जाणे मित्र समानो रे ॥ श्री गुरुदेवने धर्म पमाडे, सुपुरुष पासें श्राणो रे ॥२॥ ए हि० ॥ नहानपणाथी जला पुरुषनो, संसर्ग कीधो वारु रे ॥ वलकलचीरीने गुण थाये, हुउं ते श्रातम तारु रे ॥३॥ ए हि०॥ धर्मवंत संघातें मलतां, नाठी श्रापद जाय रे ॥ धर्म पमाडे समकित श्रापे, श्रजयकुमार जिम राय रे ॥ ॥ ४ ॥ एहि० ॥ देश श्रनार्यमांहि हूउं, तेणें जवें सिद्धि लीधी रे ॥ श्रार्डकुमारने श्रजय कुमारशुं, प्रीति जलेरी वाधी रे ॥ ५ ॥ एहि० ॥ श्रादन देशनो श्रादन राजा, मगधदेश श्रेणिको रे ॥ विहुमांहे प्रीति हुइ जाजी, मोकले वस्तु श्रनेको रे ॥ ॥ ६ ॥ एहि० ॥ श्रजयकुमारें जेट मोकली, हय

गंय वस्तु अनेरी रे ॥ एण पेटीमां रूपन देवनी, प्रतिमा कंचन केरी रे ॥७॥ एहि० ॥ पूजानां उप गरण मोकल्यां, शील देइ सेवकनें रे॥ आर्डकुमार ने हाथे देजो, जोवा म देशो कहोने रे ॥ ८ ॥ ॥एहि०॥ सुजटें जेट कुमरने आपी, प्रतिमा पेटी मांहे रे ॥ उघाडी जोतां अति हरख्यो, अपूरव दरि सण त्यांहे रे ॥ ए ॥ एहि० ॥ विचारवा लागो नृप त्यारें, कशी वस्तु ए होइ रे ॥ हाथें कोटें प्रति मा बांधी, मस्तकें मूकी जोई रे ॥ १० ॥ एहि० ॥ एको गमें न प्रतिमा शोजे, आगल मांमी जोई रे॥ पोतें साहामो सुपरी बेगे, इणविधि सखरी होई रे ॥ ११ ॥ एहि० ॥ उहापोह करतां तिहां पाम्यो, जाति समरण सारो रे॥ पूरव जवें बे मित्रज हुंता, लीधो संयमजारो रे ॥ १२ ॥ एहि० ॥ पूरव पुण्य योगें धरम पाम्यो, तो हवे मुनिवर थाउं रे ॥ देश अनारजमां नहिं दीक्षा, आरय देशमां जाउं रे ॥ १३ ॥ एहि० ॥ वीरहाथें तेणें दीक्षा लीधी, धन्य तुं आर्डकुमारो रे ॥ अजयकुमारने ते तिहां मलि यो, वाध्यो प्रेम अपारो रे ॥ १४ ॥ एहि० ॥ तप तपतां हुउ केवल नाणी, पंचसया संघातें रे ॥ मुग

कहे भूंकी तारी माय ॥ नर कहे बोले काकण जिसी, तुक नवि खाधो काकण कसी ॥५॥ शुं बोले ठे रे शं खिणी,मुई शंखिणी तुकनी जणी ॥ सापण केम दिये सामी गाल, रूडो साप तुक जीव्युं वाल ॥६॥ रहे कहे रांघ मारुं मूशलें, स्त्री कहे शिर फोडुं पाटले ॥ इण व चनें नर चढियो काल, काल्या मस्तकना मोश्राल ॥ ७ ॥ पुरुप तणो तव करड्यो हाथ, कूटा कूटी थइ जिम व्रात ॥ वढतां थाकां दोय जण जिस्यें, पु रुष जूमि जइ सूतो तिस्यें ॥ ८ ॥ स्त्री महोटा घर नी दीकरी, रूपहीण करमें नस करी ॥ ते सूती स खरे ढोलिये, घोरे सोय सुख निद्रा लिये ॥९॥ चोरें कौतुक दीठुं घणुं, न लेउं ए नर दुःखीया तणुं ॥ बीजे घरें खातर जइ देह, गणिकानुं घर जाएयुं तेह ॥ १० ॥ कोटि पुरुपशुं क्रीडा करे, मधुर वचन मुख थी उच्चरे ॥ चोर कहे एहनुं कोण लेह, धनका जे विडंवे देह ॥ ११ ॥ त्रीजे घर खातर दिये ज्यांहिं, ब्राह्मण सूतो दीठो त्यांहिं ॥ उंदरडो हाथे मूतस्यो, स्वस्ति शब्द मुखथी उच्चस्यो ॥ १२ ॥ ए लोजीनुं कोण धन लेह, लेतां ना नवि जांखे जेह ॥ ए मर शे धन लीधा पठी, ध्यठतां गुण वोली लिये लठी

तव हरख्यां ततकाल ॥ २२ ॥ नर चिंते ए देवें फरी, रूपवती कीधी सुंदरी ॥ लरकण परगट वचन सुसार, सरव फल्युं तूठो किरतार ॥२३॥ नारीयेंनर निरख्यो ते सरूप, किहां गयो ते पापी कुरूप ॥ वच न विनय श्रा नरमां बहु, देवें दूपण टाल्युं सहु ॥२४॥ वेहु नर नारीनां मन मिल्यां, पछें वेहु जुआं सख सब्यां ॥ जाग्यो नरने निरखी नार, तु रंभा केम श्रावे वार ॥ २५ ॥ विंगणरंग जिसी उजली, जल कोठी सरखी पातली ॥ नीची ताड जिसी तुं नार, क्याहांथी श्रावी मुक घरवार ॥ २६ ॥ न्हानुं पेट जिड्यो वादलो, लमो हीण जिस्यो कांचलो ॥ जीज सुंहाली दातडा जिसी, देखी श्रधर उंट गया खसी ॥ २७ ॥ जेंशनयणी श्रावी क्यांहथी, परवालजल की जा खप नथी ॥ पग पींजणीनें वांका हाथ, वाव लशुं कोण देशे बाथ ॥ २८ ॥ लांबा दांत ने टूंकुं नाक ॥ त्रूटकनी मुख कडवां वाक्य ॥ टूंकी लटीयें घो घर साद, जा चूंरी तुक किश्यो सवाद ॥२९॥ बोली चूंरी रांकना रहे, श्रणहूता श्रवगुण मुक कहे ॥ ता हारुं रूप तो वानर जिस्युं, तुं कोण वे मुक कौतुक वस्युं ॥३०॥ वलगां दोय गयां दिवान, नारी कहे

वढती नरशुं सामी फरी ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५०॥

॥ दोहा ॥

॥ नर जलेरो शुं करे, जिहां घर नार कुनार॥ ऊ शीवे दो अंगुलां, ऊ फाडे अंगुल चार ॥ १ ॥ मांचे माकण घर अहि, जिण वन विषनी वेलि ॥ रूठो राय कुनारजा, पांचे मूतां मेल ॥ २ ॥ "श्लोक ॥ कुग्रामवासः कुनरेंद्रसेवा, कुभोजनं क्रोधमुखी च भार्या ॥ कन्यावहुत्वं च दरिद्रता च, षड् जीवलोके नरकानि संति ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ १५५२ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ टाली नर सरखां कियां दोय, पछेलां अहि अण मिलतुं होय ॥ नर कालो नारी फूटरी, रात दिवस पडतां ते वढी ॥ १ ॥ आ नारी पर सुंदर नाह, न्हानानो सुत ते कहेवाय ॥ नारी महोटानी दीकरी, वढती नरशुं साहामी फरी ॥२॥ एहने में उपाडी करी, महोटाने घर मूकी फरी ॥ एहनी स्त्री न्हानानी धीय, न्हानाने घेर मूकी तेह ॥ ३ ॥ जो वर माग्यो मुजने देह, तो एम टालो स्वामी एह ॥ राय कहे तुं सवल सुजाण, तें कीधुं तें मुज परिमाण ॥४॥ सरिखे सरिखां निजघर गयां, सही

मोडुं वहेलुं मागशो, पापी वलगुं पेट ॥ १ ॥ रुधिर मांस वल बुद्धि गई, काया तेहज ज्ञान ॥ एक क्षुधा आगें आवतां, गइ लज्या गयुं मान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तेहीज ॥

॥ मान मूकी सुत ऊठीया, खाधुं कांइ नवि जाय रे ॥ बुद्धि दिये तब निर्मली, भ्राता श्रेणिकराय रे ॥ घर त णो जार सुतने दीये ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ "श्लोक॥ यस्य बुद्धिर्बलं तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतोबलम्॥ वने सिंहो मदोन्मत्तः, शशकेन निपातितः " ॥ २ ॥ बुद्धि श्रेणिक तिहां आपतो, तले पाथरो चीर रे ॥ सवल खंखेरजो करंमिया, भूको वावरो वीर रे ॥ घ० ॥३॥ मारता पाटु करंमिये, धंधोले वहु धीर रे ॥ पेट भरी खाये सुखडी, पण केम पीये नीर रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ शालु तणी जे पछेडियें, वींटे कुंभने त्यांहिं रे ॥ जल भर्यां वस्त्र छेइ करी, नीचोइ मुखमांहिं रे ॥ घ० ॥ ॥ ५ ॥ तात उघाडतो उंरडो, पूछे भूखनी वात रे ॥ सुत कहे श्रेणिक भ्रातथी, सुखीया सहु अमें थात रे ॥ घ० ॥ ६ ॥ माण श्रेणिक वखोडियो, खंखेरी कशुं खात रे ॥ तुमो सुत आप न लोपतां, नहिं भ्रूखवतां तात रे ॥घ० ॥ ७ ॥ एक दिन भोजन कार

यें, बेसाख्या सोइ वीर रे॥ कनक थालमां पीरशीयां, घृत खांम ने खीर रे ॥ घ० ॥ ७ ॥ श्वान शिकारीने मूकिया, नाठा मूकी ते थाल रे॥ श्रेणिक बुद्धि विचारतो, देखी कूतरा काल रे ॥ घ० ॥ ए ॥ थाल कर एक कोलियो, मूके आप मुखमांहे रे॥ पात्र उघाडी नाखतो, श्वान सघलां ठे ज्यांहिं रे ॥ घ० ॥ १० ॥ श्वान वलगे तिण थालियें, श्रेणिक कोलिया लेय रे॥ थाल बीजो वली नाखतो, श्वान तो त्यां वलगेय रे ॥ घ० ॥ ११ ॥ एकेक कवल एम थालथी, लइ पठे नाखेइ रे ॥ प्रसेनजितराय मनें जाणियुं, राज्ययोग्य ठे एह रे ॥ घ० ॥ १२ ॥ राज्य श्रेणिकने आपियुं, बीजाने दिये देश रे ॥ आप संयम लीये तातजी, मूक्या सकल कलेश रे ॥ घ० ॥ १३ ॥ चतुर थंतें सहु ठांमता, जेम कांचली नाग रे ॥ मूरख वलगी रह्या भोगमां, जिम माखी घसती पाग रे॥ घ० ॥१४॥ अंजलि जल जिस्युं आउखुं, लठी गजतणो कान रे ॥ नदीपूर वहे जोबनुं, जीव की जीयें शान रे ॥ घ० ॥ १५ ॥ समय न चेत्या जे वली, साध्यो नहिं परलोक रे ॥ तेणें नव दोय विणासिया, गयुं आउखुं फोक रे ॥ घ० ॥ १६ ॥ ८

स्युंथ जाणी नृप लंभतो, राज रमणी सुखजोग रे॥ राज्य श्रेणिकने देइ करी, लीधो संयमयोग रे॥ घ० ॥ १७ ॥ शास्त्रना नेद ए ते लहे, सेवे पंकित पाय रे ॥ ऋषन कहे हितशीखडी, सुणतां तो सुख थाय रे ॥ घ० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ १५८३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सुख थाये तस श्रंगें घणुं, उचित साचवे पुत्रज तणुं ॥ नगिनी नोजाई निज वहू, उचित एहनां साचवे सहु ॥ १ ॥ वहूनी परीक्षा करी अपार, सोंपवो निजघरनो जे नार ॥ जेम धन्नावे परीक्षा करी, चार वहू हुंती तस खरी ॥ २ ॥ एक दिन ससरे कह्यो विचार, कोने देवुं घरनो नार ॥ परीक्षा काज तेड्यो परिवार, नक्ति करे त्यां कुटुंबनी सार ॥ ३ ॥ चारे वहु तेडी तेणी वार, पांच पांच कण शालिज सार ॥ एकेक वहूने ससरो देह, मुऊ थापण राखेजो तेह ॥ ४ ॥ मागुं तव मुऊ देजो मली, सुणी वचनने चारे वली ॥ वाटें वडीयें कस्यो विचार, गरढां अकल न होय निरधार ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १५८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दांत बत्रीश खरी गया, नयणें दीधो दाय॥

कानें मांझयां रूपणां, गयो जब जोवन राय ॥ १ ॥ डुंगर डुंगर हुं जमी, वन वन जोऊं माय ॥ जडी एक न पाइयें, जेणें जोवन स्थिर थाय ॥ २ ॥ आ णंद कहे परमाणंद, नर नमिया ते कांय ॥ जेणें वाटें जोवन गयुं, पगलां निहाले त्यांय ॥३॥ आवी सोहागण लक्कडी, हम तुम थयो पीयार ॥ जे कुब या सो चल गया, तुऊ शिर दीना जार॥४॥ आवी सोहागण लक्कडी, तुऊ विण आगल शून्य॥जे दाहाडा तुऊ विण गया, ते वासर मुऊ धन्य ॥ ५ ॥ जरा धूतारी धोवणी, धोया देश विदेश ॥ विण पाणी विण पत्थरें, उज्जल कीधा केश ॥६॥ सर्व गाथा ॥१५७४॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ उज्जलकेश जिवारें थाय, जग आविर्नें योव न जाय ॥ गति मति बल तस उंडुं ज्ञान, जायें शान अने वली वान ॥१॥ घरघरणी वेठी घरघरे, लोक घणां ते हासी करे ॥ प्रायः केण न माने कोय, हाथ पाय शिर ध्रुजे सोय ॥२॥ जरातणां लरकण ए जोय, वृद्ध हुई मुऊ ससरो सोय ॥ दाणा पंच शालिना जेह, लोक देखतां दीधा तेह ॥ ३ ॥ आ गल जातां नाखी दीध, वली विचार बीजीयें कीध ॥

ससरे हित करी आप्या एह, पण साचवतां दोहिला तेह ॥ ४ ॥ फोली खाधा तेणी वार, त्रीजी वहू त्यां करे विचार ॥ पोतानुं शय्या घर जांहि, मूके जइ ते कावडा मांहि ॥ ५ ॥ चोथीनी बुद्धि अति घणी, दाणा मोकल्यां पीयर जणी ॥ एक अलगो जाइ क्यारो करी, रोपेजो पंच दाणा त्रीहि ॥ ६ ॥ उगे ते अलगा राखजो, आगल फरीने ते वावजो ॥ पहेले वरसें अधवाली थया, बीजे वरसें आठ दश कया ॥ ॥ ७ ॥ त्रीजे वरसें दोय हजार, चोथे वरसें तो वृद्धि अपार ॥ पांचमे वरसें जस्या कोठार, लख्युं ते नने कही जूहार ॥ ८ ॥ एणें अवसरें ससरे शुज परें, कुटुंब आपणुं तेडयुं घरें ॥ वहूरो चारने तेडी करी, दाणा पांच माग्या ते फरी ॥९॥ प्रथम वडी पांच दाणा देह, ससरो कहे नवि होये तेह ॥ सम देइने पूछे जिस्ये, ए न होय वहू जांखे तिस्यें ॥१०॥ शुं कीधुं कहे में नाखिया, दुःख लाग्युं ससरो खीजीया ॥ एहथी वडुं न लेउं नाम, नाखवा तणुं जलाव्युं काम ॥ ११ ॥ वेगें तेडी बीजी वहू, माहारी थापण लावो सहु ॥ दाणा पांच आणीनें देह, कहे ससरो जूआ के तेह ॥ १२ ॥ खामी ते में खाधा

थया ॥ जिम ते उजिया पहेली वहू, नांखे धान एवुं सहु ॥ २१ ॥ खाधावती सोंप्युं रांधणुं, त्रीजी रखियाने राखणुं ॥ चोथी रोहणीने घरनो जार, वधारतां आचारज सार ॥ २२ ॥ ए दृष्टांत सुणी शुज शिखी, धर्म वधारे सूधो रुषि ॥ सोढी वहूनी पेरें वली, तेह तणी मन इछा फली ॥ २३ ॥ करी परीक्षाने सोंप्यो जार, अन्यपुरुषने एह प्रकार ॥ सांग णसुत हितशिक्षा कहे, सुणे सोय एक ध्यानें रहे॥२४॥ ॥ ढाल ॥ गुरु गीतारथ मारग जोती ॥ ए देशी ॥

॥ एम वहू सुतनी परीक्षा करीने, सोंपे घरनो जारो ॥ सुत शिष्यने प्रशंसे मोढे, होये अजिमान अपारो हो ॥ जविका, सांजलजो हितशिक्षा ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्रीदेवगुरुनी मुखें स्तुति कीजें, मित्र जाई नी पूंठे ॥ सेवकना मुख उपर कीजें, सुतनी न करे जूठे हो ॥ ज० ॥ २ ॥ स्त्रीनी स्तुति करवी स्त्री आगें, जेम नर जगति करेय ॥ राजसमांहे जाय पिताजी, पुत्रने पूंठे लेय हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ देश विदे शनी वात सुणावे, तेणें सुत माह्यो थाय ॥ सकल विद्या सुतने शीखवजे, जेम ठेतस्यो नवि जाय हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ उचित सगानुं सवि साचवीयें, पगर

ते नर मागे जिव्हा हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ १६३१ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ शीख एक देऊं सुण वली, एक दिन कहे तर्ज नी आंगुली ॥ हुं सघलामांहे तुं वडी, लिखित चित्र कामिक रूयडी ॥ १ ॥ मध्यम कहे हुं महो टी खरी, जे सघला मांहे ऊंची करी ॥ संकेत चाप टी वाजे तांत, मध्यें वेसुं हुं ऊंची पांत ॥ २ ॥ अ नामिका कहे जूलुं एह, तुं लोको शिर टाकर देह ॥ नंदावर्त्त पूजाने काम, हुं आवुं शुजकारज ठाम ॥ ३ ॥ वास वारि वेढुइमंतरु, बीजां काम घणां पण करुं ॥ कहे कनिष्ठा वेठी रहे, सर्व काम कांइ तुं नवि लहे ॥ ४ ॥ सूक्ष्म काममां मुजने मान, करुं जाप खणुं हुं कान ॥ कष्टे लोही आवे काम, अनामिका वेठी रहे ठाम ॥ ५ ॥ तव बोली चारे आंगुली, श्याने वाद करो छो वली ॥ आपण चारे वहेन्यो सार, अंगूठो लीज्यो तेणि वार ॥६॥ चूंकी तमो मुज घरनी नार, पुरुष विना शूनो संसार ॥ नारी धणीयें न होये काज, पुरुष तणी सहु माने लाज ॥७॥ हुं अंगूठो नर अवतार, संघपतिने ति लक करनार ॥ तीर्थंकर मुज धावे सही, राज्याजिषे

वहे आगना ॥ न करे निश्चें अवगणां ए ॥२॥ गुरुनें दिये वहुमान रे, स्तुति परगट कहे ॥ ढांके माठुं वो लतो ए ॥ ३ ॥ मिथ्यात्वी नर कोय रे, करतो अव गणा ॥ वारे सर्व शक्ति करी ए ॥ ४ ॥ कुमारसंजव मांहि रे, त्यां पण एम कह्युं ॥ निंदकने वारे सही ए ॥५॥ एक दिन ईश्वर ध्यानें रे, वेठो वनें जई ॥ नारी कहे वर किहां गयो ए ॥ ६ ॥ वनमां चाली ताम रे, जोती वर तणे ॥ दीठो ध्यानें नर रह्यो ए ॥ ७ ॥ विकूरवियो वसंत रे, शंकर तव जूवे ॥ कुण चला वा आवियो ए ॥ ८ ॥ दीठी नारी ताम रे, राग थयो वहु ॥ पारवती पाठी वली ए ॥ ९ ॥ हृदय विचारे ईश रे, जोउं मुक उपरें ॥ राग किस्यो नारी तणो ए ॥ १० ॥ धर्युं वटुकनुं रूप रे, उमयाघर गयो ॥ वोले चूंकुं ईशनुं ए ॥११॥ सर्वगाथा ॥१६५६॥

॥ ठप्पय ॥

॥ ईश न पूजो देव, हुवो जिल्लीनो रागी ॥ जोरु आगें नाचि, हुउं सो वडो अजागी ॥ अफिम उंर व उत्तम, जंग वहु खावे जंगी ॥ जोगी कहावे आप, पूजावे लोककुं लिंगी ॥ काम जलाया जग कहे, त्रिया विना नहिं एकलो, संघवी ऋषज एम उचरें,

जिस्ये, सगर जीव ते धायो तिस्ये ॥ घणा पुरुषने लेह, तस्करशुं ते जश्श्र वढेह ॥ ३ ॥ नागा चोर गया ऊसरी, सुखें जातरा संघें करी ॥ एम श्रागम गुरुनो प्रत्यनीक, वारे वेगें न गणे छींक ॥ ४ ॥ राय जणी जो जावुं थाय, तो दश पुरुष मलीने जाय ॥ श्रण मिलतो जाये एकलो, तो कूटाये गाढो जलो ॥ ५ ॥ घणां रांक मली करे काम, जय पामे तस वाधे माम ॥ सुण दृष्टांत घणा तणखलां, मली वांधे गजयूथज जलां ॥ ६ ॥ संप विना सिद्धि क्यां नवि थाय, जारंरू पंखी सुणो कथाय ॥ उदर एकनें माथां दोय, युगल जीव तिहां कणे होय ॥ ७ ॥ वेहुने फलनी इन्ना हती, वेहुए चाले एकें चित्ति ॥ ज्यारें वेहु वेचिंता थाय, ततक्षण दोव मरीनें जाय ॥ ८ ॥ इण दृष्टांतें संपें सुखी, मरम प्रकाशे थाये डुःखी ॥ वाल्मिक उदर सर्पनी परें, मरे मरम प्रगट ते करे ॥ ए ॥ वसंत पुरें एक वाल्मिक राय, ज्यारें जल पीधुं एक दाय ॥ नाहानो श्रहि उदरें श्राविया, मांहिंयकी वाधे ते जीयो ॥ १० ॥ पेट वध्युं तव राजा तणुं, श्रंगें वेदन वाधी घणुं ॥ जूपें श्रन्न न खाधुं जाय, दूध शाकरें शाता थाय ॥ ११ ॥

थाप्यो साप ग्रने वेदना, नृप मरवा हूआ एक मना॥ नगरबाहिर गया तेणी वार, साथें राणी बहु परिवार ॥१२॥ निशासमय सूतो वनमांहि, निजराणी पासें छे त्यांहि ॥ रायवदन जब पहोलुं करे, तब मणिधर बाहिर नीसरे ॥१३॥ न्यग्रोध तले एक बीजो साप, मल्या एकठा विहुये साप ॥ वाल्मिक उदर सर्पने कहे,कां तुं राय उदरमां रहे ॥१४॥ निकल बाहिर नृप थाये सुखी, पृथवीपतिने म कर दुःखी ॥ सर्प कहे नवि मूकुं ठार, शाकर दूध पामुं नित्य सार ॥ ॥ १५ ॥ त्यां मर्म प्रकाशे साप, सकुरु मल्यो नथी तुज आप ॥ विपकोचलां जो तुजने पाय, तो तुं मांहीथकांही जाय ॥ १६ ॥ उदर साप बोल्यो आरडी, तुजने न मल्यो को गारुडी ॥ कनुं तेल वि लमांहि धरे, मरे तुंहि कदा कर्मी करे ॥ १७ ॥मर्म प्रकाशे मांहो मांह, राणी जागे सुणती त्यांह ॥ वा द्दाणे ऊंपड बहुनां करे, सर्पयुगल नहि क्षणमां मरे ॥ १८ ॥ नाठो राय तणो निदां रोग, नृपति पूछे ऑषध योग ॥ राणी कहे मांगीने वात, सर्प दोयनो कर्यो निपात ॥ १९ ॥ राय कहे तुं चूकी आप, कां मार्यां उपगारी साप ॥ पण राणी नहि ताहरा

रो वांक, शास्त्रमांहि श्रठे इम श्रांक ॥ २० ॥ मर्म प्रकाशे मांहोमांहिं, तेहने जय नवि होये क्यांहि ॥ नाग तणी परें पामे मरण, राजा द्रव्य करे तस हरण ॥ २१ ॥ संपें बाधे सघरो रंग, आप वरगनो न तजे संग ॥ जो पोतें धन जाजुं होय, निर्धनने नवि तेरु सोय ॥ २२ ॥ एक दिन चोखे धरी अभिमान, फोतरांने दीधुं अपमान ॥ इस्यां कामें आवो फोतरां, मुझने मूकी जाओ परां ॥२३॥ तुम जाते मुझ वाधे लाज, मांय सेठ चोखे वरराज॥ जिनवर आगल मुझने धरे, गुरु आगल जठ गहुंली करे ॥२४॥ शकुन जुवे मुझ हाथें करी, अक्षत सेइ जाये थाल भरी ॥ सज्जन जमता मूके थाल, तेणें फोतरां मुझ संगति टाल ॥ २५ ॥ बोल्यां फोतरां [illegible] चोखाय, अमो करुं तादारी रखाय ॥ अम थी अलगा थाश्यो जदा, घणां मुशलां खाशो तदा ॥२६॥ घरटीमांहे घालीने दले, चरुआमांहि चूले जइ चले ॥ काचा चावल थोसे जलमांहि, अम मूके दुःख तुमने प्राहि ॥ २७ ॥ चोखा कहे जी करो कमाट, तुमो जाओ तुमारे वाट ॥ त्यारे फोतरयां रीझ्यां बहु, देउ जगपने पाड्यां सहु ॥ २८ ॥ नर्स



कितदृष्टिनुं ए लिंग, उचित उपरें राखे रंग ॥ ३७ ॥ चोमासें आलस परिहरे, अष्टप्रकारी पूजा करे ॥ नित्य नैवेद्य करे सुसार, विण नैवेद्य करे नहिं आहार ॥३८॥ चोमासे दीपक दिनशिरें, अष्ट मंगल देहेरामां करे॥ चाले तो नित्य मुनिने देह, पोतें पण ते आहार करेह ॥ ३९ ॥ नहिं कर पर्वें दीये ते चला, वरषमांहि दिवस केटला ॥ श्री देव गुरुनी नक्तिज करी, पछें आहार लिये परवरी ॥ ४० ॥ चाले तो नित्य करे सनात, नहिं कर मासें वावरे हाथ ॥ एक सनात वरसें पण करे, ध्वजा चढावे ते नर तरे ॥ ४१ ॥ चाले तो नित्य पूजे प्रासाद, चोमासें म करो परमाद ॥ नाहिं कर वरसें केटलीक वार, पूजी पामे नवनो पार ॥ ४२ ॥ वालाकूंची वस्तर धरे, चाले तो नित्य दीवो करे ॥ धूपादिक देहरे मूकीयें, धर्मवामें नर नवि चूकीयें ॥ ४३ ॥ नोकरवाली नें चरवला, पोशालें मूको ऊजला ॥ पाट पाटला पोतें करे, धर्मठामें आपंतां तरे ॥ ४४ ॥ प्रनावना संघवात्सल्य करे, केटलो एक काउस्सग्ग नित्य धरे ॥ तप सफाय करे पच्चरकाण, सचित्त तजे ते पंकित जाण ॥ ४५ ॥ धाणा जीरुं अजमो धान, राई

सूआ सांचवनुं मान ॥ वरियाली खसखस फल पान, खारुं लूण तजे जो शान ॥ ४६ ॥ खारुं रातुं सिंधव जेह, संचलादिक अकीधां जेह ॥ माटी खडी वरणादिक जोय, सचित्त दातण नीलां होय ॥४७॥ गहुंअ पलाल्यो सचित्त संभाल, मग चणादिक केरी दाल ॥ मिश्र होय ते नहिं आवती, सोइ न य होरे साचो यति ॥ ४८ ॥ लवणादिक पट देइ क री, उकालतां अचित्त होय फरी ॥ वेलूयें शेक्यां अचित्तज हुवां, बाकी मिश्र सहू जाणवां ॥ ४९ ॥ उंबी ऊंची ने वाखोलिया, एह सचित्त म जरो कोलि या ॥ शेकी पापड शेकी फली, लवण विना सचि त्त ए वली ॥ ५० ॥ चिभडा प्रमुख पचाख्यां जेह,म रियातां राइतां तेह ॥ मीठुं दीधुं ते पण मिश्र, जे न लिये ते जननो इष्ट ॥ ५१ ॥ रूपज कहे हित शिक्षा सही, श्रावक जनने काजें कही॥वली एक कहुं उपदेश, सुखीया जनने थ्यो उपदेश ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥ जिम सहकारें कोयल टहूके ॥

॥ ए देशी ॥

॥नर परदेशें म जाशो कोइ, धर्म काम सीदाये दोइ॥ संदेह अर्थ तणो सही ए ॥ १ ॥ त्यांहिं नवि सूझे

जास उपाय, ते नर जो परदेशें जाय ॥ घणो काल त्यां नवि रहे ए ॥२॥ चोमासें रहे एकज गामें, श्रावक न जमे गामो गामें ॥ होये जीव विराधना ए ॥३॥ पोतें पण नर दोहिलो थाय, लागे वृष्टिने सवला वाय ॥ टाढें हाडां खड खडे ए ॥४॥ मारे फकणी दोहिलो थाय, नदी उतरतो जाय तणाय ॥ चूके धनने धर्मथी ए ॥५॥ तेणें कारण चालेवुं जेहनें, शेपो काल गलाव्यो तेहने ॥ चंद्र वार जोइ चालजे ॥ ६ ॥ गुरुवारें नर गमन न कीजें, दक्षिण दिशियें पाय न दीजें ॥ दिशाशूल होये तदा ए ॥ ७ ॥ सोम अनें वलि शनिश्चर वार, पूरब पासें म करे विहार ॥ बुध मंगल उत्तर नहिं ए ॥८॥ हवे शुक्र ने आदित्य वार, पश्चिम पासें गमन असार ॥ काज न सीके चिंतव्युं ए ॥ ए ॥ जरुर चालवुं होये जारें, एक उपाय करे नर त्यारें ॥ सुखड टीलुं आदित्यें ए ॥ १० ॥ सोमें दहिनुं तिलक वणावे, मंगलें माटीनुं मन भावे ॥ बुधें टीलुं घृत तणुं ए ॥ ११ ॥ लोट तणुं टीलुं गुरुवारें, शुक्रें तेल तणुं करी त्यारें ॥ शनिवारें खलनुं करे ए ॥१२॥ चंद्र मंगल साहामो ते चालें, जिमणो सूरयो बहु सुख आले ॥ जेद ... तेहनो ए ॥१३॥

दीन हीण जोगी संन्यासी, कडी कापडी ने मठवासी ॥ अन्नदान तस दीजियें ए ॥२५॥ तेहनुं कुल न वि जुए जाति, तपविद्या धर्म पूछे म ज्ञाति ॥ यथा योग्य तस दीजियें ए ॥ २६ ॥ एणी पेरें पंथें जोजन कीजें, अणसमजे घर नवि सूईजें ॥ वणज करे व्यवहारनो ए ॥ २७ ॥ जला पुरुषने वस्त वहो रावे, धन उपार्जी वहेलो आवे ॥ रुपज कहे हित शीखडी ए ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ १७४५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ नवि दीजें बहु इंद्रिय दुःख, अति लाली नवि कीजें सुख ॥ धर्म अर्थ काम जिहां नहिं, सोय काम म करजो कहीं ॥ १ ॥ विपमुं आगन पुरुषने वार, म कर कुचेष्टा सजा मकार ॥ घणो म सेजे मासे चार, सांझे म करीश दहिनो आहार ॥ २ ॥ चंद्र सूर्यनुं ग्रहण म जोय, व्यंतर तस पाडे सहि कोय ॥ म म निरखे गर्भवंती सोय, बालक महणों पेलो होय ॥ ॥ ३ ॥ म म चांपे नुं पाये पाय, मणे नृमि अपल क्षण थाय ॥ पगें करी म म सोजो धूल, ए अप लक्षण महोटुं मूल ॥४॥ मैथुन जाणवुं नें निद्राय, म कर सवारें पंडित राय ॥ संध्याकालें जंगे आहार,

रें रे ॥ सांझ समय रे दीवो करे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
जोजन तेह रातें नहिं, जांगो खाटलो मूके रे ॥ म
कड जूयें मूंके जस्यो, रखे सुअतो ढुंके रे ॥ सां० ॥
॥ २ ॥ खाटलो वांशनो वर्जजे, वल्यो ज्यांहिं वहु
मेल रे ॥ वल्यो अशल्यो ने काथे जस्यो, सूए ते नथ
घेल रे ॥ सां० ॥३॥ सवल वृत्यो ने फोलो थयो, नथि
जिहां पांगेत रे ॥ पाथस्या विण नवि पोढियें, सुणो
पुरुष संकेत रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ रूठियो राय कुमार
जा, घरे अहि विषवेली रे ॥ जेह मांचे जस्या मांकडा,
नर तेहने तुं मेल रे ॥ सां० ॥५॥ कनक चंदन तणो ढो
लियो, वली शीशम साग रे ॥ हीरनी पाटें तेह जस्यो,
पामे पुरुष महाजाग रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ केश रूअ हीरें
जरी, इसी गोदडी ज्यांहिं रे ॥ अतलश साल उशीशडुं,
सुवे पुण्यवंत त्यांहीं रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ पाय तले रे
तकियो धरे, जलां फूल वहु धूप रे ॥ रेशम गालम
शूरियां, जूउं पुण्य सरूप रे ॥ सां० ॥ ८ ॥ मोरना
पिछना वींजणा, चामर त्यांहिं ढलाय रे ॥ गाहा शलो
क कहे सुंदरी, चांपे प्रेमशुं पाय रे ॥ सां० ॥ ९ ॥
पोढ्या पुरुष ते मालिये, वाये चिहुंदिशि वाय रे ॥
शालु असारनां पहेरणां, शाकर दूध कढाय रे ॥

॥ ढाल ॥ चेतन चेत रे प्राणीया ॥ तथा ॥
॥ चाल चतुर चंद्राननी ॥ अथवा ॥ वाल ॥
॥ म वहेलेरा आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ पांचे अंगुलें पूजीया, गुण जिन तणा गाय रे॥ दान दीधां जेणें दीपनां, लहे तोग शय्याय रे॥सेजना भाव सहु सांभलो ॥१॥ ए आंकणी॥ जीव जाणी नवि राखीया, करे परनी निंदाय रे ॥ परघरें वाढना कांगरां, अणुयाणा उजायरे ॥ सें० ॥ २ ॥ दन्त विना रे दुःखी या जमे, होंश सांभले थाय रे ॥ हायनी खाटली दोहेली, इमी क्यांहिं शय्याय रे ॥ सें० ॥ ३ ॥ सेज टाले घणा दोषने, कफ पित्त वली वाय रे ॥ अन्न पचे तन निर्मलुं, थाक उतरी जाय रे ॥ सें० ॥ ४ ॥ घोडले पाय न दीजीयें, न मुकयें पग हेठ रे ॥ नगन पणे सूए मूरखा, दरिद्री थाये नेठ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ पूर्वदिशि शिर कीजियें, वली कीजें दक्षिण शीश रे॥ विदिशि चारे जोइ परिहरो, सहो परम जगीश रे॥ ॥ सें० ॥ ६ ॥ पूरव दिशे जो मायुं करे, विद्या लेह ने होय रे ॥ दक्षिण दिशि धन पामियें, चिन्ता प श्चिमें जोय रे ॥ सें० ॥ ७ ॥ मृत्यु ने हानि होय उत्तरें, न सुए नर कोय रे ॥ सेजनां भाव सहु

ाम रे ॥ से० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ १७७४ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ सूतो नर ऊठे वली तदा, ब्राह्म मुहूरत होये दा ॥ पछे पुरुष पडिक्कमणुं करे, रयणीनुं पातक रिहरे ॥ १ ॥ नहिंतर काउस्सग्ग करजे सार, लो स्स उज्जोयगरे ते चार ॥ लागुं पाप दुःस्वपनज णुं, धूए सोय पुरुष आपणुं ॥ २ ॥ सुपन अनुन युं लेखे नहिं, सुणुं सुजावें दीठुं तहिं ॥ रोगें दीठुं चिंत्युं हिए, ठए सुपन लेखे नवि कहे ॥ ३ ॥ देव सु पन देखाडे जेह, पुण्यप्रजावें लाधुं तेह ॥ कर्मादि क पापें जे थयुं, ए त्रणेनुं फल पण कह्युं ॥ ४ ॥ सु पन दोष लागो होय जेह, पडिक्कमतां धोवाये तेह ॥ पञ्चरकाण करे बहु परें, नोकारसीने मांने धुरें ॥ ५ ॥ नोकारसीनां बे आगार, पोरसी साढ्ढ पोर सी षट सार ॥ पूरिमड्ढे आगार ठे सात, गंठसहिय चारे विख्यात ॥ ६ ॥ नीवी करतां नव आगार, ए कासणें आठज कहुं सार ॥ बेआसणें पण आगार ज आठ, देखाडे शिवमंदिर वाट ॥ ७ ॥ आंबिलमां आठज आगार, पाणस्सना षट जांख्या सार ॥ उपवासें पांचज आगार, देशावगासिउं

यें, राग द्वेष म म राखे रे ॥ श्रा श्रावकनो जव पाम्यो वो, समतां जवने लाखें रे ॥ ७ ॥ श्री गुरुवाणी सुणी ए कीजें, खबर साधुनी लीजें रे ॥ श्रोषध वस्तु अनेरी जोइयें, पूढी श्राणी दीजें रे ॥ ॥ ए ॥ श्रामंत्र ए कीजें मुनिवरने, श्रावो स्वामी घेर रे ॥ घृत खंरु पायस श्रन्नादिक, दीजें ते बहु पेर रे ॥ १० ॥ रूप म कहे हितशिक्षा सहुने, वृद्ध काल जब थाय रें ॥ मन चाहे तो स्त्री धन वंभी, लेजे तुं दिखाय रे ॥ ११ ॥ श्राराधना साची थशी करजे, संलेषण सु खदाय रे ॥ श्रंतें तुं श्रणसण श्राराधे, जो जाणे निज श्राय रे ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ १०१३ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ श्रायखुं जोवा रूप करे, ते कुंमी वेश नीरें फरे ॥ तेहमां सूर प्रतिबिंबे जिस्ये, पंखी परीक्षा करतो तिस्ये ॥ १ ॥ दक्षिण पासुं खांमुं जोय, तो षट म हिना श्रायु होय ॥ पश्चिम पासुं खांमुं मास, तो श्रायखुं वे त्रण मास ॥ २ ॥ उत्तर पासुं खांमुं होय, तो श्रायु त्रम महिना दोय ॥ पूरव पासुं खांमुं जदा, एक मास श्रायखुं तदा ॥३॥ छिद्र मध्य देखे नर को य, दश दाहाडानुं श्रायखुं होय ॥ धूम सहित तरणी

श्र, कीरति करे जग सहुश्र ॥ ३ ॥ ए हितशिक्षानो रास, सुणतां सवल उल्लास ॥ कस्यो खंजायतमां तास, जिहां बहु मानव वास ॥ ४ ॥ सर्व० ॥१०२६॥

॥ ढाल ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ घणां लोक वसे ते त्यांहिं, रास रच्यो त्रंबावतीमांहिं ॥ सकल नगरने नगरी जोय, त्रंबावती ते श्रधिकी होय ॥ १ ॥ सकलदेश तणो शिणगार, गुर्जर देश जिहां पंक्ति सार ॥ गुर्जर देशमां नगर ज बहु, हारे खंजायत श्रागलें सहु ॥ २ ॥ जिहां विवेक विचार श्रपार, वसे लोक जिहां वरणश्रढार ॥ उंलखीयें जिहां वर्णावर्ण, साधु पुरुषनां पूजे चरण ॥ ३ ॥ वसे लोक वारु धनवंत, पहेरे पटोलां नर गुणवंत ॥ कनक तणा कंदोरा जड्या, त्रण श्रांगुल ते पहोला घड्या ॥ ४ ॥ हीर तणो कंदोरो तसे, कनक तणां मादलियां मसे ॥ बांधी खलखलती हाथें खरी, सोवन सांकली गसे उतरी ॥ ५ ॥ वडा व्यवहारी जिहां दातार, शालु पाघडी बांधे सार ॥ लांबी गज नाम्यु पांत्रीश, बांधता हरखें करी शीश ॥ ६ ॥ नेरबनी पगनाइ जांहिं, जीणा जंगा पहेरे ते मांहिं ॥ उर्ही रेशमी कंद

पादशाह जेहनो धणी ॥ ते त्रंबावतीमांहे रास, जोडतां मुज पहोती आश ॥२६॥ युगलसिद्धि अने ऋतु चंद,जुर्ड संवत्सर (१६७२) धरी आनंद ॥ माधव मास उज्वल पंचमी, गुरुवारें मति होये समी ॥२७॥ में गायो हितशिक्षा रास, ब्रह्म सुनायें पूरी आश ॥ श्री गुरु नामें अति आनंद, वंदूं विजयसेन सूरींद ॥२८॥

॥ ढाल ॥ आरतीनी देशीमां ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ वंदियें विजयसेनसूरि राय, नाम जपंतां सुख संपत्त थाय ॥ वंदियें विजयसेन सूरि राय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तप गच्छ नायक गुण नहिं पारो, उसवंशे हुआ पुरुष अपारो ॥ वंदि यें० ॥ २ ॥ शाह कमाकुल हंस गयंदो, ज्योतकार जिम दिननंदो ॥ वंदियें० ॥ ३ ॥ कोडमदे सुत सिंह सरीखो, नविक लोको मुख गुरु नाणु निरख्यो ॥ वंदि यें० ॥ ४ ॥ गुरु नामें मुज पहोती आशा जोड्यो हितशिक्षानो रासो ॥ वंदियें० ॥ ५ ॥ प्रागवंश गं धवी महिराजो, तेह करतां जिनशासन काजो ॥ वं दियें० ॥ ६ ॥ संघपति तिलक धरावतो सार, नयु जय पूजी करे सफल अवतार ॥ वंदियें० ॥ ७ ॥ समकित शुद्ध मन मांहे धारी, जिनवर पूजा करे

निरय सारी ॥ वंदियें० ॥ ८ ॥ दान दया धर्म उपर राग, तेह साधे नर मुक्तिनो मार्ग ॥ वंदियें० ॥९॥ महिराज तणो सुत अति अभिराम, संघवी सां गण तेहनुं नाम ॥ वंदियें० ॥ १० ॥ समकित सा र ने व्रत जस वार, पास पुजी करे सफल अवता र ॥ वंदियें० ॥ ११ ॥ संघवी सांगणनो सुत वारु, धर्म आराधनो शक्तिज सारु ॥ वंदियें० ॥ १२ ॥ ऋषभ कवि तस नाम कहावे. प्रह उठी गुण वी रना गावे ॥ वंदियें० ॥ १३ ॥ समज्यो शास्त्र त णाज विचारो. समकितशुं व्रत पालनो वारो ॥ वंदि यें० ॥ १४ ॥ प्रह उठी पडिक्कमणुं करतो, बे आस णुं व्रत ते अंगे धरतो ॥ वंदियें० ॥ १५ ॥ चउदे नियम संभारी संक्षेपु. वीरवचन रसें अंग मुझ लेपुं ॥ वंदियें० ॥ १६ ॥ निन्य दश दरा जिनतणां जुहारुं. अहान मूकी निज आतम तारुं ॥ वंदियें० ॥ १७ ॥ आठम पार्खी पोषधमांहिं. दिवस राति सज्झाय करुं त्यांहिं ॥ वंदियें० ॥ १८ ॥ वीर वचन सुणी मनमां जेहु, प्रायें वनस्पति नवि चूंटुं ॥ वंदि यें० ॥ १९ ॥ मृषा अदत्त प्राय नहिं पाप, शील पालुं मनवचकाय आप ॥ वंदियें० ॥ २० ॥ पाप परि॰

न मिलुं मांहि, दिशितणुं मान धरुं मनमांहि ॥ वंदियें० ॥ २१ ॥ अज्ञक्ष्य बावीशने कर्मादान, प्रायें न जाये त्यां मुफ ध्यान ॥ वंदियें० ॥ २२ ॥ अनरथ दंम टालुं हुं आप, शस्त्रादिकनां नहिं मुफ पाप ॥ ॥ वंदियें० ॥ २३ ॥ सामायिक दिशिमान पण करियें, पोषध अतिथि संविज्ञागव्रत धरीयें ॥ वंदियें० ॥२४॥ सात क्षेत्र पोखी पुण्य लेउं, जीवकाजें धन थोडुंक देउं ॥ वंदियें० ॥ २५ ॥ इम पालुं श्रावक आचारो, कहेतां लघुता होये अपारो ॥ वंदियें० ॥ २६ ॥ पण मुफ मन तणो एह परिणाम, कोइक सुणि करे आतम काम ॥ वंदियें० ॥ २७ ॥ पुण्यविज्ञाग होये तिहां महारे, इस्युंअ ऋषन्न कवि आप विचारे ॥ वंदियें० ॥ २८ ॥ परउपकार काज कहिवात, धर्म करे ते होये सनाथ ॥ वंदियें० ॥ २९ ॥ ऋषन्नदासें ए जोडियो रासो, संघ सकल तणी पहोती आशो ॥ वंदियें० ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ १०७४ ॥

॥ इतिश्री हितशिक्षानो रास संपूर्ण ॥